Akhbaar Ke Baare mein Suwal Jawab (Hindi)

अख़्बार के बारे में सुवाल जवाब

- दुन्या का सब से पहला अख़्बार
- गिरिफ़्तार शुदा चोर की ख़बर लगाना कैसा ?
- दह़्शत गर्दी की वारिदात की ख़बर छापने के नुक़्सानात
- ख़बर मा'लूम करने की निराली ह़िकायत
- अख़्बार पढ़ना कैसा ?

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी

مکتبۃ المدینہ

अख़्बार के बारे में सुवाल जवाब

येह रिसाला (**अख़्बार के बारे में सुवाल जवाब**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,
अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409
E-mail : translastionmaktabhind@dawateislami.net

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

कुछ इस रिसाले के बारे में.....

आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** के र-मज़ान हॉल में 6 **जुमादल उख़्रा** 1433 सि.हि. (28.4.12) जुमुए और हफ़्ते की दरमियानी शब इल्क्ट्रॉनिक मीडिया और पेपर मीडिया के सह़ाफ़ियों और दीगर मु-तअ़ल्लिक़ीन का म-दनी मुज़ा-करा हुवा जो रात गए तक जारी रहा, एक सह़ाफ़ी ने म-दनी मुज़ा-करे में जब कि और ने म-दनी चेनल को दिये जाने वाले तअस्सुरात में (जिसे म-दनी चेनल पर दी जाने वाली दा'वते इस्लामी की ''म-दनी ख़बरें'' के अन्दर मैं ने अपनी क़ियाम गाह पर सुना) सह़ाफ़त के ह़वाले से रहनुमाई से मु-तअ़ल्लिक़ रिसाला शाएअ़ करवाने का मुत़ा-लबा किया। मेरा भी पहले ही से रिसाला पेश करने का ज़ेह्न था और इस ज़िम्न में मेरे पास सुवालन जवाबन काफ़ी मवाद मौजूद था, जो कि बनाम ''अख़्बार के बारे में सुवाल जवाब'' आप के हाथों में है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस के मुअल्लिफ़ व उ-लमाए **मुफ़त्तिशीन** को जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमाए और सह़ाफ़ियों, अख़्बार बीनों और जुम्ला मुसल्मानों की दुन्या व आख़िरत के लिये नफ़्अ़ बख़्श बनाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

त़ालिबे ग़मे मदीना व
बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व
बे ह़िसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
का पड़ोस

6 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1433 सि.हि.
27-6-2012

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

अख़्बार के बारे में सुवाल जवाब

शैतान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला पूरा पढ़ लीजिये।
اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ गुनाहों से बचने का ज़ेहन बनेगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

मदीने के सुल्तान, रह़मते आ़-लमियान, सरवरे ज़ीशान, **महबूबे रह़मान** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : जिसे कोई मुश्किल पेश आए उसे मुझ पर कसरत से **दुरूद** पढ़ना चाहिये क्यूं कि मुझ पर **दुरूद** पढ़ना मुसीबतों और बलाओं को टालने वाला है।

(اَلْقَوْلُ الْبَدِیع ص ٤١٤، بستانُ الْواعظین للجوزی ص ٢٧٤)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सह़ाफ़त की ता'रीफ़

सुवाल : "सह़ाफ़त" की क्या ता'रीफ़ है ?

जवाब : सह़ाफ़त का लफ़्ज़ "**सह़ीफ़ा**" से निकला है जिस के लु-ग़वी मा'ना हैं : "किताब या रिसाला"। बहर ह़ाल अ़-मलन एक

अ़र्सए दराज़ से ''सह़ीफ़ा'' से मुराद ऐसा मत़्बूआ़ मवाद है जो मुक़र्ररा वक़्फ़ों के बा'द शाएअ़ होता है चुनान्चे इस मफ़्हूम में ''**अख़्बार**'' और ''**माहनामों**'' को भी शामिल किया जा सकता है । ''सह़ाफ़त'', किसी भी मुआ़-मले के बारे में तह़क़ीक़ और फिर उसे सौती, ब-सरी (या'नी सुनने, देखने) या तह़रीरी शक्ल में बड़े पैमाने पर क़ारिईन (या'नी पढ़ने वाले), नाज़िरीन या सामिई़न तक पहुंचाने के अ़मल का नाम है ।

وَاللّٰہُ اعلَمُ ورسولُہٗ اَعلَم عَزَّوَجَلَّ وَصلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم۔

मौजूदा सह़ाफ़त की दो क़िस्में

सुवाल : सह़ाफ़त की कितनी क़िस्में हैं ?

जवाब : **आज** कल सह़ाफ़त दो ह़िस्सों में मुन्क़सिम है : (1) प्रिन्ट मीडिया या'नी त़बाअ़ती व इशाअ़ती ज़राइए़ इब्लाग़ । अख़्बारात, रसाइल वग़ैरा । (2) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया । या'नी बर्क़ी ज़राइए़ इब्लाग़ । रेडियो, टीवी, इन्टर नेट वग़ैरा ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

दुन्या का सब से पहला अख़्बार

सुवाल : क्या आप बता सकते हैं कि दुन्या में सब से पहला **अख़्बार** कहां से और कौन सा निकला ?

जवाब : **अख़्बार** की तारीख़ बहुत पुरानी है, एक अन्दाज़े के मुत़ाबिक़ 104 सि.ई. में चीन के अन्दर **काग़ज़** की ईजाद हुई, सब से

पहला छापाख़ाना (Printing Press) वहीं बना और एक तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ सब से पहला मत़्बूआ़ **अख़्बार** भी चीन ही में बनाम ''गज़िट टीपाव'' (या'नी महल की ख़बरें) जारी हुवा। बर्रे अ़ज़ीम पाक व हिन्द के पहले उर्दू अख़्बार का नाम ''जामे जहां नुमा'' है जिस का सने इशाअ़त मार्च 1822 ई. है।

وَاللّٰہُ اعلَمُ ورسولُہٗ اَعلَم عَزَّوَجَلَّ وَصلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم۔

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़ुदकुशी की ख़बरें

सुवाल : सुना है आप ''ख़ुदकुशी'' की वारिदात की ख़बर **अख़्बार** में शाएअ़ करने से इख़्तिलाफ़ रखते हैं ?

जवाब : मअ़ नाम व पहचान ख़ुदकुशी करने वाले मुसल्मान की ख़बर की इशाअ़त चूंकि ख़िलाफ़े शरीअ़त है इस लिये इस अन्दाज़ पर आने वाली ख़बर से इख़्तिलाफ़ है। इस ज़िम्न में तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ''दा'वते इस्लामी'' के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 505 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''ग़ीबत की तबाह कारियां'' सफ़ह़ा** 192 का इक़्तिबास मुला-ह़ज़ा हो : फ़ौत शुदा लोगों की बुराई करना भी **ग़ीबत** है, बा'ज़ अवक़ात बड़ा **सब्र** आज़्मा मुआ़-मला होता है। म-सलन डाकू, दह्शत गर्द, अपने अ़ज़ीज़ के क़ातिल वग़ैरा क़त्ल कर दिये जाएं या उन्हें फांसी लगा दी जाए तो कई लोग (मक़्तूलीन की बे सबब मज़म्मत कर के) **ग़ीबत** के गुनाह में पड़ ही जाते हैं। इसी त़रह़ **ख़ुदकुशी** करने वाले

मुसल्मान के बारे में बिला इजाज़ते शर-ई येह कह देना कि ''फ़ुलां ने ख़ुदकुशी की'' येह **ग़ीबत** है । लिहाज़ा नाम व पहचान के साथ किसी मुसल्मान की **ख़ुदकुशी** की **अख़्बार** में ख़बर भी न लगाई जाए कि इस से मरने वाले की **ग़ीबत** भी होती और इस के साथ साथ मर्हूम के अहलो इयाल की इज़्ज़त पर भी बट्टा लगता है। (और अगर ख़बर लगाई म-सलन ''फ़ुलां ने फ़ुलां को क़त्ल कर के'' या ''जूआ में बड़ी रक़म हार कर ख़ुदकुशी कर ली'' तो ऐसी ख़बर से मर्हूम के ख़ुदकुशी करने से क़ब्ल का ऐ़ब भी खुलता है जो कि ख़बर लगाने वालों के ह़क़ में **दो ग़ीबतों** या'नी गुनाह दर गुनाह का बाइ़स बनता है । बल्कि इस त़रह़ की ख़बरों की इशाअ़त से مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ गुनाहों और अ़ज़ाबों की कसरत का अन्दाज़ा लगाना ही मुश्किल है क्यूं कि अख़्बार के ज़रीए ऐसी ख़बरें हज़ारों लाखों अफ़राद तक पहुंचती हैं । (وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ تعالٰى) हां, इस अन्दाज़ में तज़्किरा किया (या अख़्बार में ख़बर लगाई) कि पढ़ने या सुनने वाले **ख़ुदकुशी** करने वाले को पहचान ही न पाए कि वोह कौन था तो ह़रज नहीं मगर येह ज़ेह्न में रहे कि नाम न लिया मगर गाउं, मह़ल्ला, बरादरी, अवक़ात, **ख़ुदकुशी** का (सबब व) अन्दाज़ वग़ैरा बयान करने से **ख़ुदकुशी** करने वाले की शनाख़्त मुम्किन है, लिहाज़ा पहचान हो जाए इस अन्दाज़ में तज़्किरा भी **ग़ीबत** में शुमार होगा । **मस्अला** येह है कि मुसल्मान **ख़ुदकुशी** करने से इस्लाम से ख़ारिज नहीं हो जाता इस की **नमाज़े जनाज़ा** भी अदा की जाएगी, इस के लिये (ईसाले सवाब और) **दुआए मग़्फ़िरत** भी करेंगे । मरने वाले मुसल्मान को (ख़्वाह उस ने ख़ुदकुशी ही की हो) बुराई से

याद करने की शरीअ़त में इजाज़त नहीं। इस ज़िम्न में **दो फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुला-हज़ा हों : ﴿1﴾ अपने मुर्दों को बुरा न कहो क्यूं कि वोह अपने आगे भेजे हुए आ'माल को पहुंच चुके हैं। ﴿2﴾ (بُخاری ج۱ص۴۷۰ حدیث ۱۳۹۳) अपने मुर्दों की ख़ूबियां बयान करो और उन की बुराइयों से बाज़ रहो। (تِرمِذی ج۲ص ۳۱۲حدیث ۱۰۲۱) हज़रते अ़ल्लामा मुहम्मद अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی लिखते हैं : **मुर्दे** की ग़ीबत ज़िन्दे की ग़ीबत से बदतर है, क्यूं कि ज़िन्दा शख़्स से **मुआ़फ़** करवाना मुम्किन है जब कि मुर्दा से मुआ़फ़ करवाना मुम्किन नहीं। (فَیْضُ الْقَدِیر لِلْمناوِی ج۱ص۵۶۲تَحتَ الْحدیث۸۵۲)

पहलूओं से गोश्त काट कर खिलाने का अ़ज़ाब

प्यारे सह़ाफ़ी इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ग़ीबत की नुहूसत से हम सभी की ह़िफ़ाज़त फ़रमाए। **आमीन**। जब किसी एक फ़र्द के सामने **ग़ीबत** करना भी आख़िरत के लिये तबाह कुन है तो उन अख़्बारों के ज़िम्मेदारों का क्या अन्जाम होगा जो कि घर घर **ग़ीबतें** पहुंचाते और लाखों लाख अफ़राद को **ग़ीबतों भरी ख़बरें** पढ़ाते हैं ! ख़ुदारा ! कभी अपनी ना तुवानी पर तन्हाई में ग़ौर कीजिये कि हमारी ह़ालत तो येह है कि मा'मूली ख़ारिश भी बरदाश्त नहीं होती, नाख़ुन का मा'मूली चर्का (या'नी हलका सा चीरा) भी सहा नहीं जाता तो अगर **ग़ीबत** कर के बिग़ैर तौबा किये मर गए और अ़ज़ाबे इलाही में फंस गए तो क्या

बनेगा ! **ग़ीबत** के मुख़्तलिफ़ होलनाक अ़ज़ाबात में से एक अ़ज़ाब मुला-हज़ा हो, **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : जिस रात मुझे आस्मानों की सैर कराई गई तो मेरा गुज़र एक ऐसी क़ौम पर हुवा **जिन के पहलूओं से गोश्त काट कर ख़ुद उन ही को खिलाया जा रहा था** । उन्हें कहा जाता : खाओ ! तुम अपने भाइयों का गोश्त खाया करते थे । मैं ने पूछा : **ऐ जिब्रईल** येह कौन हैं ? अ़र्ज़ की : येह लोगों की **ग़ीबत** किया करते थे । **(دَلائِلُ النُّبُوَّة لِلْبَيْهَقى ج ٢ ص ٣٩٣ ،تَنبِيهُ الغافِلين ص ٨٦)**

وَاللّٰهُ اعلَمُ ورسولُهٗ اَعلم عَزَّوَجَلَّ وَصلَّى الله تعالٰى عليه واٰلِهٖ وسلَّم۔

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

(वसाइले बख़्शिश, स. 667)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ुदकुशी में नाकाम रहने वालों की ख़बरें

सुवाल : ख़ुदकुशी की नाकाम कोशिश करने वालों की ख़बरों के मु-तअ़ल्लिक़ आप क्या कहते हैं ?

जवाब : बिला मस्लह़ते शर-ई नाम व पहचान के साथ किसी मुसल्मान की ऐसी ख़बर शाएअ़ करना गुनाह है कि यक़ीनन इस में न सिर्फ़ एक मुसल्मान की बल्कि उस के सारे ख़ानदान की रुस्वाई और बदनामी का सामान है । पेशगी मा'ज़िरत के साथ अ़र्ज़ है : **अल्लाह** न करे आप में से **किसी सह़ाफ़ी या अख़्बार के मालिक या मुदीर** या किसी T.V. चेनल के डायरेक्टर

के घर में **ख़ुदकुशी** की कोई (काम्याब या) नाकाम "वारिदात" हो जाए तो वोह क्या करेगा ? यक़ीनन आप फ़रमाएंगे कि वोह येह सानिहा छुपाने और इस की ख़बरे वहूशत असर की इशाअ़त रुकवाने के लिये अपना पूरा ज़ोर सर्फ़ कर देगा ! दुन्या में इ़ज़्ज़त और आख़िरत में जन्नत के तृलब गार प्यारे सहाफ़ियो ! इसी तनाज़ुर में आप को दूसरे मुसल्मानों की इ़ज़्ज़त का भी सोचना चाहिये । "बुख़ारी शरीफ़" में है : ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं : "मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से नमाज़ पढ़ने, ज़कात देने और हर मुसल्मान की ख़ैर ख़्वाही करने पर बैअ़त की ।" (بخاری ج ۱ ص ۳۰ حدیث ۵۷) आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "हर फ़र्दे इस्लाम की ख़ैर ख़्वाही (या'नी भलाई चाहना) हर मुसल्मान पर **फ़र्ज़** है ।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 14, स. 415) **मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : जिस मुसल्मान की ग़ीबत की जा रही हो, उस की इ़ज़्ज़त बचाने वाले को फ़िरिश्ता पुल सिरात़ पर परों में ढांप कर गुज़ारेगा ताकि दोज़ख़ की आग की तपिश उस तक न पहुंच पाए। (मिरआत, जि. 6, स. 572 मुलख़्ख़सन)

وَاللّٰہُ اعلَمُ ورسولُہٗ اَعلم عَزَّوَجَلَّ وَصلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم۔

ग़मे ह़यात अभी राह़तों में ढल जाएं
तेरी अ़त़ा का इशारा जो हो गया या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 96)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मारे जाने वाले डाकूओं की मज़म्मत

सुवाल : आप ने "ग़ीबत की तबाह कारियां" के इक़्तिबास में तो डाकूओं, दहशत गर्दों वग़ैरा जिन्हों ने लोगों का सुकून बरबाद कर के रख दिया है उन के क़त्ल हो जाने या फांसी लग जाने के बा'द उन की भी मज़म्मत करने से मन्अ़ कर दिया !

जवाब : **मैं** ने हर सूरत को मन्अ़ नहीं किया और न ही अपनी त़रफ़ से मन्अ़ किया, सिर्फ़ हुक्मे शरीअ़त बयान किया है, जो मुसल्मान वाक़ेई चोर या डाकू थे और अपने कैफ़रे किरदार को पहुंच गए अब हो सके तो उन के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत की जाए, उन को बिग़ैर सह़ीह़ मक़्सद के हरगिज़ बुरा भला न कहा जाए कि अह़ादीसे मुबा-रका में अपने मुर्दों को बुराई के साथ याद करने की मुमा-न-अ़त है, बल्कि वोह ज़िन्दा हों उस वक़्त भी बिला मस्लह़ते शर-ई उन्हें बुरा भला कहने की इजाज़त नहीं, मज़म्मत की **मु-तअ़द्दद** सूरतों में से बा'ज़ ना जाइज़ सूरतें हमारे ज़माने में येह भी हैं कि महज़ टाइम पास करने, गपें मारने, बुराई बयान करने या महज़ एक ख़बर बनाने के त़ौर पर मज़्कूरा बाला अफ़्राद को बुरा कहा जाता है, हां, अख़्बार वाले अगर इस निय्यत से ऐसों की मज़म्मत भरी ख़बर छापें ताकि इन के अन्जाम से मुसल्मानों को इ़ब्रत ह़ासिल हो तो जाइज़ बल्कि कारे सवाब है। وَاللّٰہُ اعلَمُ ورسولُہٗ اَعلَم عَزَّوَجَلَّ وَصلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم۔

वोह इस वक़्त जन्नत की नहरों में ग़ोते लगा रहा है

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 505 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**ग़ीबत की**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

तबाह कारियां'' सफ़हा 191 पर ''सु-नने अबू दावूद'' के ह़वाले से मरक़ूम है : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : माइज़ अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जब रज्म किया गया था, (या'नी ज़िना की ''ह़द'' में इतने पथ्थर मारे गए कि वफ़ात पा चुके थे) दो शख़्स आपस में बातें करने लगे, एक ने दूसरे से कहा : इसे तो देखो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस की पर्दा पोशी की थी मगर इस के नफ़्स ने न छोड़ा, رُجِمَ رَجْمَ الْکَلْبِ या'नी **कुत्ते की त़रह़ रज्म किया गया**। हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सुन कर सुकूत फ़रमाया (या'नी ख़ामोश रहे)। कुछ देर तक चलते रहे, रास्ते में **मरा हुवा गधा** मिला जो पाउं फैलाए हुए था। **सरकारे वाला तबार**, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन दोनों शख़्सों से फ़रमाया : जाओ इस मुर्दार गधे का गोश्त खाओ। उन्हों ने अ़र्ज़ की : **या नबिय्यल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! इसे कौन खाएगा ! इर्शाद फ़रमाया : वोह जो तुम ने अपने भाई की आबरू रेज़ी की, वोह इस गधे के खाने से भी ज़ियादा सख़्त है। क़सम है उस की जिस के हाथ में मेरी जान है ! वोह (या'नी माइज़) इस वक़्त जन्नत की नहरों में ग़ोते लगा रहा है। (ابوداؤد ج٤ ص١٩٧ حديث ٤٤٢٨)

وَاللّٰهُ اعلَمُ ورسولُهٗ اَعلَم عَزَّوَجَلَّ وَصلَّى اللّٰه تعالٰی علیه واٰلهٖ وسلَّم۔

तू मरने वाले मुसल्मां को मत बुरा कहना
''तू बे ह़िसाब, इसे बख़्श, या ख़ुदा'' कहना

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

चोर डाकू की गिरिफ़्तारी की ख़बरें देना

सुवाल : जो चोर या डाकू पकड़े गए **अख़्बार** में उन की ख़बर लगाने के मु-तअ़ल्लिक़ आप क्या कहते हैं ?

जवाब : **अव्वल** तो येह देख लिया जाए कि जो पकड़े गए वोह वाक़ेई **चोर** या **डाकू** हैं भी या नहीं ! **बहारे शरीअ़त** जिल्द 2 **सफ़ह़ा** 415 पर **मस्अला** नम्बर 2 है : ''चोरी के सुबूत'' के दो त़रीक़े हैं : **एक** येह कि चोर ख़ुद इक़्रार करे और इस में चन्द बार की ह़ाजत नहीं सिर्फ़ एक बार (का इक़्रार) काफ़ी है **दूसरा** येह कि दो मर्द गवाही दें और अगर एक मर्द और दो औ़रतों ने गवाही दी तो क़त़्अ़ (या'नी हाथ काटने की सज़ा) नहीं मगर माल का तावान दिलाया जाए और गवाहों ने येह गवाही दी कि (हम ने चोरी करते नहीं देखा फ़क़त़) हमारे सामने (चोरी का) इक़्रार किया है तो येह गवाही क़ाबिले ए'तिबार नहीं। गवाह का आज़ाद होना शर्त़ नहीं (या'नी ग़ुलाम की गवाही भी यहां मक़्बूल है)। (دُرِّمُختار و رَدُّالمُحتار ج ٦ ص ١٣٨) **दुवुम** येह कि पकड़े जाने वालों की ख़बर लगाने में मस्लह़ते शर-ई देखी जाए। उ़मूमन ख़बरें लगाने में कोई सह़ीह़ मक़्सद पेशे नज़र नहीं होता नीज़ शर-ई सुबूत की भी परवाह नहीं की जाती बस यूं ही ''ख़बर बराए ख़बर'' छापने की तरकीब कर दी जाती है, जभी तो बारहा ऐसा होता है कि जिस को बत़ौरे ''मुजरिम'' अख़्बारों में ख़ूब उछाला गया बा'द में वोही ''बा इ़ज़्ज़त बरी'' भी हो गया ! **तो जिस का चोर, डाकू, ख़ाइन या ठग** (Cheater) **वग़ैरा होना शरअ़न साबित न हो उस को ''मुजरिम'' क़रार देना ही गुनाह है** चे जाएकि उसे अख़्बार में बत़ौरे मुजरिम मुश्तहर कर के लाखों लोगों में

ज़लीलो ख़्वार कर देना ! यक़ीनन येह एक बहुत बड़ा गुनाह है और इस में उस मुसल्मान बल्कि उस के पूरे ख़ानदान की सख़्त बे इ़ज़्ज़ती और शदीद ईज़ा व दिल आज़ारी का सामान है।

तूने चोरी की (ह़िकायत)

प्यारे सह़ाफ़ी इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप की और मेरी आबरू मह़फ़ूज़ रखे, पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ हमें चोरी करने और किसी मुसल्मान पर चोरी का इल्ज़ाम धरने से बचाए। आमीन। **बे** सोचे समझे सुनी सुनाई बात में आ कर किसी मुसल्मान को **चोर** कहना या लिख देना आसान नहीं। इस ज़िम्न में **मुस्लिम** शरीफ़ की रिवायत मुला-ह़ज़ा हो : चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** के **मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़ह़ुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ह़ज़रते **ईसा** इब्ने मरयम ने एक शख़्स को चोरी करते देखा तो उस से फ़रमाया : "سَرَقْتَ" या'नी "तूने चोरी की।" वोह बोला : "हरगिज़ नहीं, उस की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं।" तो (ह़ज़रते) ईसा ने फ़रमाया : اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَ كَذَّبْتُ نَفْسِیْ ۔ या'नी मैं **अल्लाह** पर ईमान लाया और मैं ने अपने आप को झुटलाया। (مُسلِم ص ١٢٨٨ حدیث ٢٣٦٨) **मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان उस **क़सम** खाने वाले को छोड़ देने के **मु-तअ़ल्लिक़** ह़ज़रते सय्यिदुना **ईसा रूहुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के फ़रमान की वज़ाह़त करते हुए तह़रीर फ़रमाते हैं : या'नी इस

क़सम की वजह से तुझे सच्चा समझता हूं कि मोमिन बन्दा **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की झूटी क़सम नहीं खा सकता, (क्यूं कि) उस के दिल में **अल्लाह** के नाम की ता'ज़ीम होती है, अपने **मु-तअ़ल्लिक़** ग़लत़ फ़हमी का ख़याल कर लेता हूं कि मेरी आंखों ने देखने में ग़-लती की। (मिरआत, जि. 6, स. 623) और इमाम न-ववी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस ह़दीस के तह़त फ़रमाते हैं : "कलाम का ज़ाहिर येह है कि मैं ने **अल्लाह तआ़ला** की क़सम खाने वाले की तस्दीक़ की और उस का चोरी करना जो मेरे सामने ज़ाहिर हुवा, मैं ने इस को झुटलाया। (वज़ाह़त येह है कि) शायद उस शख़्स ने वोह चीज़ ली थी जिस में उस का ह़क़ था या इस ने ग़स्ब का क़स्द नहीं किया था या ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ज़ाहिरी तौ़र पर यूं मह़सूस हुवा कि उस शख़्स ने हाथ बढ़ा कर कोई चीज़ ली (या'नी चुराई) है लेकिन जब उस ने ह़लफ़ लिया (या'नी क़सम खाई) तो आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपना गुमान साक़ित़ कर दिया और उस गुमान से रुजूअ़ कर लिया।" (شرح مسلم للنووی ج۸ص۱۲۲)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِىِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

وَاللّٰهُ اعلَمُ ورسولُهٗ اَعلَم عَزَّوَجَلَّ وَصلَّى الله تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم۔

है मोमिन की इ़ज़्ज़त बड़ी चीज़ यारो !
बुराई से उस को न हरगिज़ पुकारो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

गिरिफ़्तार शुदा चोर की ख़बर लगाना कैसा ?

सुवाल : जो शख़्स बतौ़रे चोर या डाकू शनाख़्त कर लिया गया हो उस की ख़बर **अख़्बार** में लगाई जा सकती है या नहीं ?

जवाब : **शर-ई** सुबूत ह़ासिल हो जाने की सूरत में भी येह ग़ौर कर लीजिये कि इस की ख़बर **अख़्बार** में "ख़बर बराए ख़बर" छाप रहे हैं या कोई अच्छी निय्यत भी है ! म-सलन बतौ़रे **चोर** मुश्तहर होने पर उस की होने वाली ज़िल्लत से दूसरे लोग इ़ब्रत ह़ासिल करें नीज़ आयन्दा के लिये इस बद काम से मोह़तात़ भी हो जाएं इस निय्यत से चोरी की ख़बर की इशाअ़त की जा सकती है । **चोर** अगर्चे बहुत बुरा बन्दा है मगर बिग़ैर किसी शर-ई मस्लह़त के उस की तज़्लील व तश्हीर जाइज़ नहीं, क्यूं कि चोर होने के बा वुजूद **ब ह़ैसिय्यते** मुसल्मान उस की ह़ुरमत बाक़ी है । हां जितनी शरीअ़त की त़रफ़ से तश्हीर व तज़्लील की इजाज़त है उतनी की जा सकती है, इस से ज़ाइद नहीं या'नी येह नहीं कि अब مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जिस की मरज़ी हो जब चाहे ग़ीबत करता रहे ! फ़ी ज़माना **अख़्बार** वालों के पास शर-ई सुबूत की इत्तिलाअ़ के मो'तमद (या'नी क़ाबिले ए'तिमाद) ज़राएअ़ होते हैं या नहीं इस को सह़ाफ़ी साह़िबान ख़ूब समझ सकते हैं । नीज़ जिस अन्दाज़ में और जिस तरकीब से ख़बरें लेते हैं उस में येह भी ग़ौर किया जाए कि क़ानून की रू से इस की इजाज़त भी है या नहीं । हर मुसल्मान की अपनी अपनी जगह इ़ज़्ज़त व ह़ुरमत है, सभी को चाहिये कि **एह़तिरामे मुस्लिम** का लिह़ाज़ रखें। **सु-ननेइब्ने माजह** में है : **ख़ा-तमुल मुर-सलीन,**

रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने का'बए मुअ़ज़्ज़मा से मुख़ातिब हो कर इर्शाद फ़रमाया : **मोमिन की ह़ुरमत** (या'नी इ़ज़्ज़त व आबरू) **तुझ से ज़ियादा है ।**

(اِبن ماجه ج٤ ص٣١٩ حديث ٣٩٣٢)

चोर से बढ़ कर मुजरिम

जिस के यहां चोरी हुई उस को भी चाहिये कि ख़्वाह म ख़्वाह हर एक पर शुबा करता और तोहमत धरता न फिरे जैसा कि आज कल अक्सर ऐसा हो रहा है म-सलन घर में कोई चीज़ चोरी हो जाती है तो कभी बे क़ुसूर बहू मुत्तहम होती या'नी तोहमत की ज़द में आती है तो कभी भावज की शामत आती है या घर के नोकर पर बिजली गिराई जाती है ह़ालां कि किसी के बारे में शर-ई सुबूत तो दर कनार बसा अवक़ात कोई वाज़ेह़ क़रीना भी नहीं होता ! लिहाज़ा सभी को इस रिवायत से इ़ब्रत ह़ासिल करनी चाहिये जैसा कि **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : वोह शख़्स जिस का माल चोरी हुवा, हमेशा तोहमत (लगाने) में रहेगा यहां तक कि वोह **चोर से** (भी) **बड़ा मुजरिम** बन जाएगा ।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 109, **(شُعَبُ الْاِيمان ج٥ ص٢٩٧ حديث٦٧٠٧**

وَاللّٰهُ اعلَمُ ورسولُهٗ اَعلَم عَزَّوَجَلَّ وَصلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم۔

सुनूं न फ़ोहूश कलामी न ग़ीबतो चुग़ली
तेरी पसन्द की बातें फ़क़त सुना या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 93)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुल्ज़म का नाम छापना कैसा ?

सुवाल : जो मुल्ज़म पकड़े जाते हैं उन के नाम मअ़ पहचान **अख़्बार** में छापे जा सकते हैं या नहीं ?

जवाब : यहां ग़ीबत के जवाज़ की उ़मूमी शाराइत़ के साथ दो बातें और हैं, **अव्वलन** येह कि महूज़ इल्ज़ाम न हो बल्कि सुबूते शर-ई हो या'नी उस का मुजरिम होना क़ानूनन साबित हो चुका हो, **दूसरा** येह कि जुर्म ऐसा हो कि उस की तश्हीर से अ़वामुन्नास को फ़ाएदा हो, या'नी जैसे बा'ज़ अवक़ात महूज़ ज़ाती मुआ़-मलात होते हैं और उन पर गिरिफ़्तारी हो जाती है, इन मुआ़-मलात का अ़वाम के साथ कोई तअ़ल्लुक़ नहीं होता तो उन की तश्हीर की हरगिज़ इजाज़त नहीं । मज़्कूरा बाला तफ़्सील से वाज़ेह़ हो गया कि बा'ज़ सूरतों में **अख़्बार** में नाम मअ़ पहचान देने की इजाज़त है और बा'ज़ में नहीं क्यूं कि इस से उन को और उन के ख़ानदान वालों को सख़्त अज़िय्यत होगी । किसी की गिरिफ़्तारी अगर ज़ुल्मन महूज़ ख़ानापुरी या किसी इन्तिक़ामी कारवाई के ज़िम्न में की गई हो तब तो गिरिफ़्तारी भी सख़्त गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। और गिरिफ़्तारी का हुक्म जारी करने वाला, गिरिफ़्तार करने वाला वग़ैरा जो भी उस मज़्लूम की गिरिफ़्तारी में जान बूझ कर शरीक हुए सभी गुनहगार और अ़ज़ाबे नार के ह़क़दार हैं । नीज़ ज़ाबित़ए ता'ज़ीराते पाकिस्तान की दफ़्आ़त 499 से 502 के तह़्त "येह लोग ख़ुद क़ाबिले गिरिफ़्तारी मुजरिम" ठहरते हैं ।

मुसल्मान की बे इ़ज़्ज़ती कबीरा गुनाह है

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना**

की मत़्बूआ़ 505 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**ग़ीबत की तबाह कारियां**'' **सफ़ह़ा** 58 ता 59 का एक लरज़ा ख़ैज़ इक़्तिबास मुला-ह़ज़ा हो जो कि ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वालों के लिये निहायत ही इ़ब्रत अंगेज़ है चुनान्चे **रसूले** बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : बेशक किसी मुसल्मान की नाह़क़ बे इ़ज़्ज़ती करना कबीरा गुनाहों में से है। (ابوداؤد ج٤ ص٣٥٣حديث٤٨٧٧)

ख़ुदा व मुस्त़फ़ा को ईज़ा देने वाला

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़क़ीक़त येह है कि एक मुसल्मान अपने दूसरे मुसल्मान भाई की इ़ज़्ज़त का मुह़ाफ़िज़ है मगर अफ़्सोस ! ऐसा नाज़ुक दौर आ गया है कि अब अक्सर मुसल्मान ही दूसरे मुसल्मान भाई की इ़ज़्ज़त के पीछे पड़ा हुवा है जी भर कर **ग़ीबतें** कर रहा है और चुग़्लियां खा रहा है, बिला तकल्लुफ़ तोह्मतें लगा रहा है, बिला वजह दिल दुखा रहा है, **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ रिसाले, ''**ज़ुल्म का अन्जाम**'' **सफ़ह़ा** 19 ता 20 पर है : **ह़ुक़ूक़ुल इ़बाद** का मुआ़-मला बड़ा नाज़ुक है मगर आह ! आज कल बेबाकी का दौर दौरा है, अ़वाम तो कुजा ख़वास कहलाने वाले भी उ़मूमन इस की त़रफ़ से ग़ाफ़िल रहते हैं। ग़ुस्से का मरज़ आ़म है इस की वजह से अक्सर ''ख़वास'' भी (बिला इजाज़ते शर-ई) लोगों (को एक दम झाड़ देते और उन) की दिल आज़ारी कर बैठते हैं और इस की त़रफ़ उन की बिल्कुल तवज्जोह नहीं होती कि

किसी मुसल्मान की बिला वज्हे शर-ई दिल आज़ारी गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **फ़तावा र-ज़विय्या** शरीफ़ जिल्द 24 **सफ़ह़ा** 342 पर **त़-बरानी शरीफ़** के ह़वाले से नक़्ल करते हैं : सुल्त़ाने दो जहान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : **مَنْ اٰذٰی مُسْلِمًا فَقَدْ اٰذَانِیْ وَمَنْ اٰذَانِیْ فَقَدْ اٰذَی اللّٰہ.** (या'नी) जिस ने (बिला वज्हे शर-ई) किसी मुसल्मान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी। **(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۲ ص۳۸۷ حدیث ۳۶۰۷)** **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم को ईज़ा देने वालों के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 22 **सू-रतुल अह़ज़ाब** आयत 57 में इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِیْنًا ﴿۵۷﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जो ईज़ा देते हैं **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और उस के रसूल को उन पर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की ला'नत है दुन्या व आख़िरत में और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।

وَاللّٰہُ اعلَمُ ورسولُہٗ اَعلَم عَزَّوَجَلَّ وَصلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم۔

गुनाह बे अ़दद और जुर्म भी हैं ला ता'दाद
कर अ़फ़्व सह न सकूंगा कोई सज़ा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 93)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

दह्शत गर्दी की वारिदात की ख़बर छापने के नुक़्सानात

सुवाल : दह्शत गर्दी की वारिदातों की ख़बरें छापने के मु-तअ़ल्लिक़ आप की क्या राय है ?

जवाब : **अगर** मेरी ज़ाती राय मा'लूम करना मक़्सूद है तो अ़र्ज़ है कि दह्शत गर्दी की वारिदातों की ख़बरें छापने में कोई भलाई नहीं, उलटा **मु-तअ़द्दद** नुक़्सानात हैं म-सलन इस से ख़्वाह म ख़्वाह ख़ौफ़ो हिरास फैलता है, नीज़ जज़्बाती और मुजरिमाना ज़ेह्निय्यत के कई नादान इन्सान मारधाड़ पर उतर आते, ख़ूब अस्लह़ा चलाते, गोलियां बरसाते, मकानों और दुकानों, बसों और कारों वग़ैरा की तोड़फोड़ मचाते, गाड़ियां जलाते, लूटमार मचाते और अपने वत़ने अ़ज़ीज़ की इम्लाक नज़्रे आतश कर के दर ह़क़ीक़त अपने ही पाउं पर कुल्हाड़े चलाते हैं और यूं दह्शत गर्दों की मैली मुरादें बर आती हैं कि अक्सर दह्शत गर्दी के ज़रीए इन का मक़्सद ही बद अम्नी फैलाना होता है और सितम ज़रीफ़ी येह है कि बा'ज़ ज़राइए इब्लाग़ ख़ूब मिर्च मसाले लगा कर तख़्रेब कारियों की ख़बरें चमका कर इस मुआ़-मले में दह्शत गर्दों के ख़्वाही न ख़्वाही मुआ़विन साबित होते बल्कि एक दूसरे से बढ़ चढ़ कर गोया मददगार बनते हैं और क़राइन से ऐसा लगता है कि दो चार आ़म अफ़्राद की हलाकतों पर मब्नी ख़बर इन के नज़्दीक ख़ास क़ाबिले तवज्जोह ही नहीं होती ! कोई अहम लीडर मारा जाए, ढेरों लाशें गिरें, ग़ैर मा'मूली नुक़्सान हो, ख़ूब हंगामे हों, जगह ब जगह गाड़ियां जलाई जा रही हों, शह्र बन्द पड़ा हो जभी

ख़ूब सन्सनी ख़ैज़ सुर्ख़ियां (Headings) लगतीं और ठीकठाक **अख़्बार** बिकते हैं ।

وَاللّٰهُ اعلَمُ ورسولُهٗ اَعلَم عَزَّوَجَلَّ وَصلَّی اللّٰہ تعالٰی علیه واٰلهٖ وسلَّم۔

याद रख्खो ! वोही बे अ़क़्ल है अह़मक़ है जो
कस्रते माल की चाहत में मरा जाता है

(वसाइले बख़्शिश, स. 126)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दह्शत गर्दी की ख़बर अख़्बार की जान होती है

सुवाल : दह्शत गर्दी की ख़बर तो **अख़्बार** की जान होती है, आज कल **अख़्बार** बिकता ही इस त़रह़ की ख़बरों से है । क्या दह्शत गर्दी की ख़बर देना जाइज़ ही नहीं ?

जवाब : मैं ने जवाज़ व अ़-दमे जवाज़ (या'नी जाइज़ और ना जाइज़ होने) की बात नहीं की, अपनी ज़ाती राय के मुत़ाबिक़ इस त़रह़ की ख़बरों के उन मन्फ़ी अ-सरात (Side Effects) की जानिब तवज्जोह दिलाने की सअ़्य की है, जिन का आ़म मुशा-हदा है, और हर ज़ी शुऊ़र मुसल्मान اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझ से इत्तिफ़ाक़ करेगा । मेरे नाक़िस ख़याल में अगर दह्शत गर्दियों और इश्तिआ़ल अंगेज़ ख़बरों की दुन्या भर में इशाअ़त बन्द हो जाए तो दह्शत गर्दियां भी काफ़ी ह़द तक दम तोड़ जाएं ! इन्सिदादे तख़्रीब कारी के इदारे बेशक फ़अ़्आ़ल रहें और दुश्मनों पर कड़ी नज़र रखें । अ़वाम को अगर्चे सन्सनी ख़ैज़ ख़बरों से अक्सर दिलचस्पी होती है मगर इस में उन का अपना कोई फ़ाएदा नहीं, बस एक ''फ़ुज़ूल मौज़ूअ़''

हाथ आ जाता है, बेकार बातों, क़ियास आराइयों इन्तिज़ामिया पर तन्क़ीदों और तोह्मतों वग़ैरा का सिलसिला चल निकलता है ! दुन्या के जिन ममालिक में इस त़रह़ की दाख़िली वारिदातों की तश्हीर पर पाबन्दी है वहां न हड़तालें होती हैं न हंगामे, वोह पुर अम्न भी हैं और दुन्यवी ए'तिबार से तरक़्क़ी की राहों पर गामज़न भी । अगर ऐसी ख़बरों की इशाअ़त न करने में उम्मत का कोई बहुत बड़ा नुक़्सान नज़र आता हो और सवाब का बहुत बड़ा ज़ख़ीरा हाथ से निकलता मह़सूस होता हो तो सह़ाफ़ी ह़ज़रात मेरी तफ़्हीम फ़रमाएं, मैं अपने मौक़िफ़ पर اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नज़रे सानी कर लूंगा । नीज़ सह़ाफ़ी ह़ज़रात भी "ज़मानत ज़ब्त़" या "अख़्बार की इशाअ़त पर पाबन्दी" का बाइस बनने वाले क़ानूने मत़्बूआ़त व सह़ाफ़त के ज़ाबित़ए ता'ज़ीराते पाकिस्तान की दफ़्आ़ 24 के तह़त आने वाले 15 जराइम में से शिक़ नम्बर 3 और 6 पर ग़ौर फ़रमा लें । (शिक़ नम्बर 3) तशद्दुद या जिन्स से तअ़ल्लुक़ रखने वाले जराइम की ऐसी रूदाद जिस से ग़ैर सिह़्ह़त मन्दाना **तजस्सुस** या नक़्ल का ख़याल पैदा होने का इम्कान हो (शिक़ नम्बर 6) अम्ने आ़म्मा में ख़लल डालने की कोशिश ।

وَاللّٰهُ اعلَمُ ورسولُهٗ اَعلَم عَزَّوَجَلَّ وَصلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰلِهٖ وسلَّم۔

सरफ़राज़ और सुर्ख़-रू मौला
मुझ को तू रोज़े आख़िरत फ़रमा

(वसाइले बख़्शिश, स. 113)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सह़ाफ़त की आज़ादी

सुवाल : आप की बातों से ऐसा लगता है कि आप सह़ाफ़त की आज़ादी से मुत्तफ़िक़ नहीं !

जवाब : मैं हर उस ''आज़ादी'' से ग़ैर मुत्तफ़िक़ हूं जो ''आख़िरत की बरबादी'' का बाइस हो, मैं इस वक़्त मुसल्मानों से मुख़ातिब हूं और जो सह़ाफ़ी मुसल्मान हैं उन पर ख़ुद ही शरीअ़त की त़रफ़ से पाबन्दियां आ़इद हैं, वोह मन मानी करने के लिये ''**आज़ाद**'' ही कब हैं ! हां ता'मीरे क़ौम व मिल्लत के लिये शरीअ़त के दाएरे में रह कर बेशक वोह ख़ूब अपना क़लम इस्ति'माल करें । **फ़ी नफ़्सिही सह़ाफ़त** कोई बुरी चीज़ भी नहीं, **सह़ाफ़त** का सब से बड़ा उसूल सच्चाई है, सदाक़त ही पर **सह़ाफ़त** की इ़मारत ता'मीर हो सकती है । हमारी तारीख़ में ऐसे बे शुमार **सह़ाफ़ियों** के नाम मौजूद हैं जिन को हम आज भी सलाम करते और उन के कारनामों की क़द्र करते हैं । वोह बेबाक थे, ह़क़ गो थे, दियानत दार थे, उन का लिखा हुवा एक एक ह़र्फ़ गोया अनमोल हीरा होता था जिसे वोह क़ौम की नज़्र करते थे ।

''अच्छे बच्चे घर की बात बाहर नहीं किया करते !''

मीठे मीठे सह़ाफ़ी इस्लामी भाइयो ! अल्लाह तआ़ला हम सब को अ़क़्ले सलीम की ने'मत इ़नायत फ़रमाए । **आमीन ।** बा शुऊ़र लोग अपने बच्चों को शुरूअ़ ही से येह ता'लीम देते हैं कि देखो बेटा ! ''अच्छे बच्चे घर की बात बाहर नहीं किया करते ।'' मगर **बा'ज़** अख़्बारात का

किरदार इस मुआ़-मले में नादान बच्चों से भी गया गुज़रा होता है, बस जो ख़बर हाथ लगी, छाप दी, अब चाहे इस से नस्ली फ़सादात को हवा मिले चाहे लिसानी फ़सादात को, चाहे इस से कोई ज़ख़्मी हो या किसी की लाश गिरे, ख़्वाह इस से किसी का घर तबाह हो या चाहे अपना वत़ने अ़ज़ीज़ ही दाव पर लग जाए । कैसी ही राज़दारी की ख़बर क्यूं न हो, **आज़ादिये सह़ाफ़त** के नाम पर छापनी ज़रूर है, गोया हर त़रह़ की हर ख़बर की इशाअ़त ही आज़ादिये सह़ाफ़त है ! हर समझदार आदमी येह बात जानता है कि हर बात हर किसी को नहीं बताई जाती । फिर जब आदमी ज़बानी बात करता भी है तो वोह दस बीस या पचास सो तक पहुंचती होगी मगर **अख़्बार बीनी** करने वालों की ता'दाद लाखों में होती है और दोस्त दुश्मन सभी पढ़ते हैं । काश ! बोलने से पहले तोलने और छापने से पहले नापने का ज़ेह्न बन जाए । काश ! ऐ काश ! येह **ह़दीसे पाक** हर मुसल्मान सह़ाफ़ी ह़िर्ज़े जान बना ले जिस में मेरे प्यारे प्यारे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : "जब तू किसी क़ौम के आगे वोह बात करेगा जिस तक उन की अ़क़्लें न पहुंचें तो ज़रूर वोह उन में किसी पर फ़ितना होगी ।" (اِبنِ عَساکِر ج۳۸ص۳۵۶) क्या आज़ादिये सह़ाफ़त इस का नाम है कि मुसल्मानों की बे दरेग़ इ़ज़्ज़तें उछाली जाएं ! रिश्वतें ले कर फ़रीक़े मुक़ाबिल का ह़सब नसब खंगाल डाला जाए ! मुसल्मानों पर ख़ूब ख़ूब तोह्मतें धरी जाएं ! मस्अला तो येह है कि इल्ज़ाम

तराशी ग़ैर मुस्लिमों पर भी जाइज़ नहीं मगर अफ़्सोस ! कि अब मुसल्मान एक दूसरे के ख़िलाफ़ तोह्मतों से भरपूर बयानात दाग़ते और **आज़ादिये सह़ाफ़त** के नाम पर बा'ज़ अख़्बारात उन्हें आंखें बन्द कर के छापते हैं, ख़ुसूसन इन्तिख़ाबात के दिनों में बत़ौरे रिश्वत मिलने वाले चन्द सिक्कों की ख़ात़िर किसी एक फ़रीक़ से "तरकीब" बना ली जाती है और फ़रीक़े सानी पर जी भर कर कीचड़ उछाली जाती और उस की ख़ूब ख़ूब पोलें खोली जाती हैं और यूं गुनाहों का एक त़वील सिल्सिला चल निकलता है, इन्तिख़ाबात ख़त्म हो जाते हैं मगर दुश्मनियां बाक़ी रह जाती हैं ।

ऐसी ख़बर शाएअ़ न फ़रमाएं जो फ़ितने जगाए

प्यारे प्यारे सह़ाफ़ी इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दुन्या की दौलत की ह़िर्स से हमारी ह़िफ़ाज़त करे, हमें मुसल्मानों में फ़ितने फैलाने वाला बनने से बचा कर अम्नो अमान का दाई बनाए । **आमीन ।** सद करोड़ अफ़्सोस कि बसा अवक़ात जान बूझ कर ऐसी ख़बरें भी छाप दी जाती हैं जो मुसल्मानों में फ़ितना व फ़साद और बुरा चरचा फैलने का बाइस बनती हैं, ऐसा करने वाले को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरना और अपनी मौत को याद करना चाहिये । चटपटी ख़बरों से अगर **अख़्बार** की चन्द कॉपियां बिक भी गईं और दुन्या की ज़लील दौलत में क़दरे इज़ाफ़ा हो भी गया तब भी इन से कब तक फ़ाएदा उठाएंगे ? इन्हें कब तक खाएंगे ? आख़िर इस दारे ना

पाएदार में कब तक गुलछर्रे उड़ाएंगे ? याद रखिये ! आख़िर कार आप जनाब को अंधेरी क़ब्र में उतरना ही है, और كَمَا تَدِیْنُ تُدَان (या'नी जैसी करनी वैसी भरनी) से साबिक़ा पड़ना ही है। बुरा चरचा फैलाने के अ़ज़ाब से डरने और दिल में ख़ौफ़े आख़िरत पैदा करने के लिये एक आयते करीमा और एक ह़दीसे मुबा-रका मुला-ह़ज़ा हो : पारह 18 **सू-रतुन्नूर** आयत नम्बर 19 में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِیْعَ الْفَاحِشَةُ فِی الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ۙ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह लोग जो चाहते हैं कि मुसल्मानों में बुरा चरचा फैले उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है दुन्या और आख़िरत में।

ह़दीसे पाक में है : "फ़ितना सोया हुवा होता है उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत जो इस को बेदार करे।"

(اَلْجامِعُ الصَّغِیر لِلسُّیُوطی ص۳۷۰ حدیث ۵۹۷۵)

सन्सनी ख़ैज़ ख़बरें फैलाना

इस बात पर जिस क़दर अफ़्सोस किया जाए कम है कि आज कल बा'ज़ सह़ाफ़ियों का काम ही सिर्फ़ अफ़्वाहें उड़ाना और सन्सनी ख़ैज़ ख़बरें फैलाना रह गया है। उन की तमाम तर कोशिश येही होती है कि किसी त़रह़ घरों में घुस कर लोगों के सन्सनी फैलाने वाले ज़ाती ह़ालात मा'लूम करें हो सके तो बत़ौरे सुबूत फ़ोटो भी बना लें और उन की अ़ाम तश्हीर कर के उन्हें बे आबरू करें, मुसल्मानों को एक दूसरे से **मु-तनफ़्फ़िर** करें और लड़ाएं, अब इन का सब से बड़ा कारनामा जासूसी रह गया है, ख़बरें तो जासूसी,

मज़ामीन तो जासूसी और कहानियां तो वोह भी जासूसी । **अल्लाह तआ़ला** हम मुसल्मानों को एक दूसरे की इ़ज़्ज़त का मुहाफ़िज़ बनाए और दोनों जहानों में सुर्ख़-रू करे ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

وَاللّٰہُ اعلَمُ ورسولُہٗ اَعلَم عَزَّوَجَلَّ وَصلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم۔

अख़्लाक़ हों अच्छे मेरा किरदार हो सुथरा
महबूब का सदक़ा तू मुझे नेक बना दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 106)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

सहाफ़ियों का कुरेद कर बातें उगलवाना

सुवाल : अगर सहाफ़ी मौक़अ़ ब मौक़अ़ घरों पर जा कर "कुरेद" नहीं करेंगे तो क़ौम तक सहीह़ अह़वाल कौन पहुंचाएगा !

जवाब : क़ौम को हर सत्ह़ के लोगों के बिग़ैर किसी हुदूद व कुयूद के मआ़इब (या'नी ऐबों) से बा ख़बर करने की आख़िर ह़ाजत ही क्या है ? किसी एक आध क़ौमी व अ़वामी मस्अले से **मु-तअ़ल्लिक़** बत़ौरे ख़ास कोई एक आध तह़क़ीक़ शुदा बात बयान करने की तो इजाज़त हो सकती है लेकिन हमारे हां जो कुछ होता है वोह कुछ ढका छुपा नहीं । याद रखिये कि किसी के ज़ाती मुआ़-मलात की टोह में पड़ने और उन की "छान कुरेद" करने की शरीअ़त ने मुमा-न-अ़त फ़रमाई है। चुनान्चे पारह 26 **सू-रतुल हुजुरात** आयत 12 में इर्शाद होता है :

وَلَا تَجَسَّسُوْا

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ऐब न ढूंडो ।

मुसल्मानों की ऐबजूई न करो

इस हिस्सए आयते मुक़द्दसा के तह़्त **सदरुल अफ़ाज़िल** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡھَادِی **"ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** में फ़रमाते हैं : "या'नी मुसल्मानों की ऐबजूई न करो और इन के छुपे ह़ाल की **जुस्त-जू** में न रहो जिसे **अल्लाह तआ़ला** ने अपनी सत्तारी से छुपाया। **ह़दीस शरीफ़** में है : गुमान से बचो गुमान बड़ी झूटी बात है और मुसल्मानों की ऐबजूई न करो, इन के साथ ह़िर्स व ह़सद, बुग़्ज़, बे मुरव्वती न करो, ऐ **अल्लाह तआ़ला** के बन्दो ! भाई बने रहो जैसा तुम्हें हुक्म दिया गया, मुसल्मान मुसल्मान का भाई है, उस पर ज़ुल्म न करे, उस को रुस्वा न करे, उस की तह़्क़ीर न करे, तक़्वा यहां है, तक़्वा यहां है, तक़्वा यहां है, (और "यहां" के लफ़्ज़ से अपने सीने की त़रफ़ इशारा फ़रमाया) आदमी के लिये येह बुराई बहुत है कि अपने मुसल्मान भाई को ह़क़ीर देखे, हर मुसल्मान, मुसल्मान पर ह़राम है, उस का ख़ून भी, उस की आबरू भी, उस का माल भी । "**अल्लाह तआ़ला** तुम्हारे जिस्मों और सूरतों और अ़-मलों पर नज़र नहीं फ़रमाता लेकिन तुम्हारे दिलों पर नज़र फ़रमाता है ।"[1] (بخاری و مسلم) **ह़दीस शरीफ़** में है : जो बन्दा दुन्या में दूसरे की पर्दा पोशी करता है **अल्लाह तआ़ला** रोज़े क़ियामत उस की पर्दा पोशी फ़रमाएगा ।[2]"

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 950, मक-त-बतुल मदीना)

۱ مسلم، ص ۱۳۸۶ حدیث ۱۳۸۷،۱۳۸۶ ۲ بخاری ج ۲ ص ۱۲٦ حدیث ۲٤٤۲

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह़ और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी । (مجمع الزوائد)

......तो तुम उन को ज़ाएअ़ कर दोगे

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का येह इर्शादे मुअ़ज़्ज़म ख़ुद सुना है : ‘‘ **اِنَّکَ اِنِ اتَّبَعْتَ عَوْرَاتِ النَّاسِ اَفْسَدْتَّھُمْ۔** ’’अगर तुम ने लोगों के (पोशीदा) ड़यूब तलाश किये तो तुम उन को तबाह कर दोगे ।’’

(ابوداؤدج٤ص٣٥٦حدیث٤٨٨٨)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : ज़ाहिर येह है कि इस फ़रमाने आ़ली में ख़ित़ाब ख़ुसूसी त़ौर पर जनाबे मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) से है चूंकि आयन्दा येह सुल्त़ान बनने वाले थे, तो उस ग़ुयूब दां मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने पहले ही उन को त़रीक़ए सल्त़नत की ता’लीम दी कि तुम बादशाह बन कर लोगों के ख़ुफ़्या ड़यूब न ढूंढा करना, दर गुज़र और ह़त्तल इम्कान अ़फ़्वो करम से काम लेना और हो सकता है कि रूए सुख़न सब से हो कि बाप अपनी जवान औलाद को, ख़ावन्द अपनी बीवी को, आक़ा अपने मा तह़तों को हमेशा शक की निगाह से न देखे । बद गुमानियों ने घर बल्कि बस्तियां बल्कि मुल्क उजाड़ डाले ।

(मिरआत, जि. 5, स. 364, मुख़्तसरन)

ऐ़ब जू ख़ुद रुस्वा होगा

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : "ऐ वोह लोगो जो ज़बान से तो ईमान लाए हो मगर जिन के दिलो में अभी तक ईमान दाख़िल नहीं हुवा ! न तो मुसल्मानों की **ग़ीबत** करो और न ही उन के **पोशीदा ऐ़ब** तलाश करो क्यूं कि जो मुसल्मानों के पोशीदा ऐ़ब तलाश करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के ऐ़ब ज़ाहिर फ़रमा देगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के ऐ़ब ज़ाहिर फ़रमा दे तो वोह उसे ज़लीलो रुस्वा कर देगा अगर्चे वोह अपने घर के अन्दर बैठा हुवा हो ।"

(ابوداؤدج٤ص٣٥٤حديث٤٨٨٠)

प्यारे प्यारे सह़ाफ़ी इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात ऐ़बों से पाक है, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और मलाएका नक़ाइस (या'नी ख़ामियों) से पाक और मा'सूम हैं, बाक़ी हम जैसे गुनहगार तो सरासर ऐ़बदार हैं। येह तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करम है कि उस ने हमारे ऐ़बों पर पर्दा डाला हुवा है, वोह चाहता है कि उस के बन्दे भी एक दूसरे का पर्दा फ़ाश न करें लेकिन जो बाज़ नहीं आता और दूसरों को ज़लीलो ख़्वार करने की घात में लगा रहता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे भी दुन्या व आख़िरत में ज़लील कर देता है ह़त्ता कि उस के वोह **ऐ़ब** भी ज़ाहिर कर देता है जो उस ने अपने अहले ख़ाना से छुपा रखे थे और इस त़रह़ वोह अपने घर वालों की नज़रों से भी गिर जाता है और फिर इस की औलाद तक इस का एह़तिराम नहीं करती ।

मुसल्मानों के ऐ़ब ढूंडना मुनाफ़िक़ का काम है

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुह़म्मद बिन मनाज़िल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : اَلْمُؤْمِنُ يَطْلُبُ مَعَاذِيْرَ اِخْوَانِهٖ या'नी मोमिन तो अपने मुसल्मान भाइयों का उ़ज़्र तलाश करता है وَالْمُنَافِقُ يَطْلُبُ عَثَرَاتِ اِخْوَانِهٖ "जब कि मुनाफ़िक़ अपने भाइयों की ग़-लतियां ढूंडता फिरता है।" (شُعَبُ الْاِيمان ج۷ ص۵۲۱ حدیث ۱۱۱۹۷) मत़लब येह कि ईमान की अ़लामत लोगों के उ़ज़्र क़बूल करना है जब कि उन की ग़-लतियां तलाश करना निफ़ाक़ की निशानी है। وَاللّٰهُ اعلَمُ ورسولُهٗ اَعلَم عَزَّوَجَلَّ وَصلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم۔

किसी की ख़ामियां देखें न मेरी आंखें और
सुनें न कान भी ऐ़बों का तज़्किरा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 99)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बदकारी की ख़बर लगाना कैसा ?

सुवाल : बदकारी के मुल्ज़मीन की **अख़्बार** में ख़बरें लगाने के बारे में आप क्या कहते हैं ?

जवाब : इन ख़बरों का मौजूदा अन्दाज़ उ़मूमन ग़ैर मोह़तात़ और गुनाहों भरा होता है। गन्दी ख़बरों का बा'ज़ अख़्बारों में बा क़ाइदा सिल्सिला चलाया जाता है, मुल्ज़म और मुल्ज़मा की तसावीर शाएअ़ की जातीं और ख़ूब ह़या सोज़ बातें लिखी जाती हैं और येह यक़ीनन **ना जाइज़** है। और इस त़रह़ बसा अवक़ात मुल्के पाकिस्तान के "क़ानूने मत़्बूआ़त व सह़ाफ़त" की भी

ख़िलाफ़ वर्ज़ी की जाती है। दफ़्आ 24 के तह़्त जिन 15 शिक़्कों का बयान है उस की शिक़ नम्बर (3) और (7) मुला-ह़ज़ा हो : (3) तशद्दुद या जिन्स से तअ़ल्लुक़ रखने वाले जराइम की ऐसी रूदाद जिस से ग़ैर सिह़्ह़त मन्दाना **तजस्सुस** या नक़्ल का ख़याल पैदा होने का इम्कान हो (7) ग़ैर शाइस्ता, फ़ोहूश, दुश्नाम आमेज़ या हत्क आमेज़ मवाद की इशाअ़त ।

ज़िना का शर-ई सुबूत

येह बात ख़ूब ज़ेह़न नशीन कर लीजिये कि किसी को ज़ानी और ज़ानिया साबित करना निहायत दुश्वार अम्र है । इस के शर-ई सुबूत की सूरत येह है कि या तो वोह ख़ुद इक़्रार करे या फिर चार ऐसे आ़दिल गवाह चाहिएं जिन्हों ने आंखों से ज़िना होते देखा हो । मगर इतनी बात पर भी उन पर "ह़द" जारी नहीं हो सकती जब तक क़ाज़ी मुख़्तलिफ़ सुवालात कर के हर त़रह़ से इत्मीनान न कर ले । अल ग़रज़ ज़िना के शर-ई सुबूत में काफ़ी बारीकियां हैं, जो बिग़ैर शर-ई सुबूत के किसी पाक दामन मुसल्मान को ज़ानी या ज़ानिया कहे या लिखे वोह सख़्त गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है ।

लोहे के 80 कोड़ों की सज़ा

इस ज़िम्न में एक दिल हिला देने वाली रिवायत सुनिये और ख़ौफ़े ख़ुदा वन्दी से थर-थराइये ! चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1182 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त** जिल्द **2**" **सफ़ह़ा** 394 पर है : (ह़ज़रते)

अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) (सय्यिदुना) इ़क्रमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) से रिवायत करते हैं, वोह कहते हैं : एक औ़रत ने अपनी बांदी को ज़ानिया कहा । **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : तूने ज़िना करते देखा है ? उस ने कहा : नहीं । फ़रमाया : क़सम है उस की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है ! क़ियामत के दिन इस की वजह से **लोहे के अस्सी[80] कोड़े** तुझे मारे जाएंगे । (مُصَنَّف عَبْد الرَّزَّاق ج۹ ص۳۲۰ رقم۱۸۲۹۱) (ख़ुसूसन सह़ाफ़ियों से म-दनी इल्तिजा है : **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त जिल्द 3 के अन्दर शामिल ह़िस्सा 9 में ज़िना, तोहमत, शराब नोशी वग़ैरा के फ़िक़्ही अह़कामात मुला-ह़ज़ा फ़रमा लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात में इज़ाफ़ा होगा और ख़ौफ़े ख़ुदा में तरक़्क़ी होगी)

وَاللّٰہُ اعلَمُ ورسولُہٗ اَعلَم عَزَّوَجَلَّ وَصلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم۔

दे ख़ुदा ऐसी नज़र जो ख़ूबियां देखा करे
ख़ामियां देखे न बस अच्छाइयां देखा करे

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इश्तिहारात के बारे में म-दनी फूल

सुवाल : अख़्बारात आ़म तौ़र पर इश्तिहारात ही की आमदनी से चलते हैं, इस ज़िम्न में कुछ **म-दनी फूल** दे दीजिये ।

जवाब : अख़्बारात में इश्तिहारात छापने जाइज़ हैं बशर्ते कि जानदार की तस्वीर या कोई और मानेए़ शर-ई न हो । जादू टोना करने वालों, सूदी इदारों, ख़िलाफ़े शर-अ़ अक़्सात़ पर कारोबार

करने वालों, गुनाहों भरी लॉटरियों, ग़ैर इस्लामी अ़क़ाइद पर मब्नी किताबों, नीज़ ग़ैर मुस्लिमों के मज़्हबी तहवारों की मुबारक बादियों वग़ैरा पर मुश्तमिल इश्तिहारात न छापे जाएं । आज कल एडवर्टाइज़्मेन्ट में अक्सर झूट या झूटी मुबा-लग़ा आराई से काम लिया जाता है, अख़्बारात वालों को इस त़रह़ के इश्तिहारात छापने से भी बचना ज़रूरी है, म-सलन जा'ली या नाक़िस या जिन दवाओं से शिफ़ा का गुमाने ग़ालिब नहीं है उन के बारे में इस त़रह़ की सुर्ख़ी : ''सो फ़ी सदी शर्तिया इलाज'' येह झूटा मुबा-लग़ा है, बल्कि ऐसे जुम्ले तो किसी भी दवाई के बारे में नहीं कहने चाहिएं क्यूं कि हर त़बीब जानता है कि त़िब सारे का सारा ज़न्नी है, किसी भी दवा के बारे में यक़ीन के साथ येह नहीं कहा जा सकता कि इस से शिफ़ा हो ही जाएगी । बे शुमार वोह अमराज़ जिन के मुआ़-लजात दरयाफ़्त हो चुके हैं, उन्हीं अमराज़ में इलाज की तमाम मुजर्रब सूरतें आज़्मा लेने के बा वुजूद रोज़ाना बे शुमार मरीज़ दम तोड़ देते हैं, येह इस बात की वाज़ेह़ दलील है कि कोई भी दवा ऐसी नहीं जिस के ज़रीए शिफ़ा मिलना यक़ीनी हो । शिफ़ा सिर्फ़ **मिन जानिबिल्लाह** है । बहर ह़ाल अख़्बारात में गुनाहों भरे इश्तिहारात शाएअ़ करना गुनाह है, सिर्फ़ जाइज़ इश्तिहारात छापे जाएं । क़ुरआने करीम, पारह 6 **सू-रतुल माइदह** आयत नम्बर 2 में इर्शादे रब्बुल इ़बाद है :

وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۪ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝۲

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और नेकी और परहेज़ गारी पर एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न दो और **अल्लाह** से डरते रहो बेशक **अल्लाह** का अ़ज़ाब सख़्त है ।

وَاللّٰہُ اعلَمُ ورسولُہٗ اَعلَم عَزَّوَجَلَّ وَصلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم۔

बन्दे पे तेरे नफ़्से लई हो गया मुहीत़
अल्लाह ! कर इलाज मेरी हिर्सों आज़ का

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़िल्मी इश्तिहारात

सुवाल : फ़िल्मी इश्तिहारात के बारे में भी कुछ रोशनी डाल दीजिये ।

जवाब : फ़िल्मों डिरामों और म्यूज़िक शो वग़ैरा के इश्तिहारात अपने अख़्बारात में देना गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, ऐसे इश्तिहारात के ज़रीए मिलने वाली उजरत भी ह़राम है । इस त़रह़ के इश्तिहारात देख कर जितने लोग वोह फ़िल्म या डिरामा देखेंगे या म्यूज़िक शो में शरीक होंगे उन सब को अपना अपना गुनाह मिलेगा जब कि उन सब के मज्मूए़ के बराबर गुनाह **अख़्बार** के मालिकों और इस में इश्तिहार डालने के ज़िम्मेदारों को मिलेंगे । म-सलन इश्तिहार के ज़रीए आगाही पा कर दस हज़ार अफ़राद ने फ़िल्म देखी तो मज़्कूरा अख़्बार वालों

को दस हज़ार गुनाह मिलेंगे।

وَاللّٰہُ اعلَمُ ورسولُہٗ اَعلَم عَزَّوَجَلَّ وَصلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم۔

सरवरे दीं ! लीजे अपने ना तुवानों की ख़बर
नफ़्सो शैतां सय्यिदा ! कब तक दबाते जाएंगे

(हदाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अख़बारी मज़ामीन कैसे हों ?

सुवाल : अख़बार के मज़ामीन कैसे होने चाहिएं ?

जवाब : इस्लाम के रंग में रंगे हुए, **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की **महब्बत** क़ुलूब में बेदार करने वाले, सहाबा व अहले बैते किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और औलियाए इज़ाम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلام के इश्क़ से दिलों को सरशार करने वाले, नेकियों से प्यार दिलाने और गुनाहों से बेज़ार करने वाले मज़ामीन **अख़्बार** में होने चाहिएं। ऐसे मौज़ूआत क़लम बन्द किये जाएं कि पढ़ने वाले नमाज़ी और सुन्नतों के पाबन्द बनें, वालिदैन की इताअ़त का दर्स लें और उन का आपस में भाईचारे और **महब्बत** व उख़ुव्वत का ज़ेहन बने। मगर सद करोड़ अफ़्सोस ! ऐसा नहीं, अक्सर अख़बारात, हफ़्त रोज़े और माहनामे फ़ोहश, लचर और **मुख़र्रिबुल अख़्लाक़** मज़ामीन और इश्क़िया व फ़िस्क़िया तहरीरात से पुर होते हैं। उन्हें पढ़ कर लोग दीन से मज़ीद दूर होते, नित नए गुनाहों की रग़बत पाते और चोरियों, डकेतियों के नए नए गुर सीखते हैं।

उ़-लमा व मशाइख़ की किरदार कुशी

प्यारे प्यारे सह़ाफ़ी इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें उ़-लमाए अहले सुन्नत के क़दमों में रखे और बरोज़े ह़श्र इन्हीं के ज़ुमरे में उठाए। आमीन। फ़ी ज़माना तो ऐसा लगता है कि बा'ज़ अख़्बार वालों को उ़-लमा व मशाइख़ और मज़्हबी शक्लो शबाहत से जैसे चिड़ हो ! जहां किसी मज़्हबी फ़र्द या मस्जिद के इमाम या मुअज़्ज़िन वग़ैरा की किसी ख़ता की भनक कान में पड़ी, उसे हाथों हाथ लिया और उस मज़्हबी फ़र्द की तज़्लील और किरदार कुशी का कई दिन तक के लिये बा क़ाइदा एक सिल्सिला चला दिया ! हां किसी आ़मिल व बाबा या'नी ता'वीज़ गन्डे देने वाले की भूल सामने आने और शर-ई सुबूत मिल जाने की सूरत में उस फ़र्दे ख़ास के शर से लोगों को बचाने के लिये उस के **मु-तअ़ल्लिक़** बयान करना दुरुस्त है और इसी त़रह़ इस क़बील (या'नी क़िस्म) के दूसरे झूटे लोगों और ठगों से मोह़तात़ रहने का मश्वरा देना भी बहुत मुनासिब है लेकिन येह हरगिज़ हरगिज़ जाइज़ नहीं कि उसे ''नक़्ली पीर'' क़रार दे कर ह़क़ीक़ी उ़-लमा व मशाइख़ को बदनाम करने की मज़्मूम तरकीबें शुरूअ़ कर दें, ह़ालां कि हर ता'वीज़ात देने वाला पीरी मुरीदी नहीं करता, आ़मिल होना और चीज़ है और पीर होना और।

बा'ज़ कॉलम निगारों के कारनामे

बा'ज़ ''कॉलम निगार'' भी निहायत बेबाकी के साथ शर-ई मुआ़-मलात में दख़ील होते और इस्लामी अक़्दार

को पामाल करते नज़र आते हैं, नीज़ जिस की चाहते हैं अपने कॉलम के ज़रीए इज़्ज़त उछालते और उस की आबरू की धज्जियां बिखेर देते हैं और जिस पर "मेहरबान" हो जाते हैं वोह अगर्चे पापी समाज में पलने वाला गन्दी नाली का कीड़ा ही क्यूं न हो उसे "हीरो" बना देते हैं !

गुनाहों भरी तह़रीर मरने के बा'द गुनाह जारी रख सकती है

मीठे मीठे सह़ाफ़ी इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम सब से सदा के लिये राज़ी हो और हमें बे ह़िसाब बख़्शे । आमीन । हर एक को येह ज़ेह्न नशीन कर लेना चाहिये कि जिस बात का ज़बान से अदा करना कारे सवाब है उस का क़लम से लिखना भी सवाब और जिस का बोलना गुनाह उस का लिखना भी गुनाह है बल्कि बोलने के मुक़ाबले में लिखने में सवाब व गुनाह में इज़ाफ़े का ज़ियादा इम्कान है **मक़ूला** है : اَلْخَطُّ بَاقٍ وَّالْعُمْرُ فَانٍ या'नी "तह़रीर (ता देर) बाक़ी रहेगी और और उ़म्र (जल्द) फ़ना हो जाएगी" बहर ह़ाल तह़रीर ता देर क़ाइम रहती और पढ़ी जाती है, वोह जब तक दुन्या में बाक़ी रहेगी लोग उस के अच्छे या बुरे अ-सरात लेते रहेंगे और लिखने वाला ख़्वाह फ़ौत हो चुका हो उस के लिये सवाब या अ़ज़ाब में ज़ियादती का सिल्सिला जारी रहेगा । गुनाहों भरी तह़रीर मरने के बा'द भी बाक़ी रह कर पढ़ी जाती रहने की सूरत में गुनाह जारी रहने का ख़ौफ़नाक तसव्वुर ही **ख़ौफ़े ख़ुदा** रखने वाले मुसल्मान का होश उड़ाने के लिये काफ़ी है !

एक ग़लत लफ़्ज़ ही कहीं जहन्नम में न डाल दे

प्यारे प्यारे सह़ाफ़ी इस्लामी भाइयो ! अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला हमें दीनो दुन्या के तमाम मुआ़-मलात में मोह़तात़ रहने की सआ़दत बख़्शे और हमारी आख़िरत बरबाद होने से बचाए । **आमीन ।** बहुत ही सोच समझ कर लिखना या बोलना चाहिये कि मबादा (या'नी ख़ुदा न करे) ज़बान या क़लम से कोई ऐसी बात सादिर हो जाए कि जो आख़िरत तबाह कर के रख दे । इस ज़िम्न में **दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुला-ह़ज़ा हों : ﴿1﴾ बेशक आदमी एक बात कहता है जिस में कोई ह़रज नहीं समझता ह़ालां कि उस के सबब **सत्तर साल** जहन्नम में गिरता रहेगा । (تِرْمِذِی ج٤ ص ١٤١ حدیث ٢٣٢١) ﴿2﴾ कोई शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी की बात करता है वोह उस मक़ाम तक पहुंचती है जिस का उस को ख़याल भी नहीं होता । पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस कलाम की वजह से उस पर अपनी नाराज़ी क़ियामत तक के लिये लिख देता है । (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِيْر ج١ ص ٣٦٥ حدیث ١١٢٩) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इल्मे दीन न होने के बा वुजूद इस्लामी मज़ामीन लिखने और शर-ई मुआ़-मलात में मुदा-ख़लत करने वालों की मज़म्मत करते हुए फ़रमाते हैं : ''जिसे उलटे सीधे दो ह़र्फ़ उर्दू के लिखने आ गए वोह मुसन्निफ़ व मुह़क़्क़िक़ व मुज्तहिद बन बैठा और दीने मतीन में अपनी नाक़िस अ़क़्ल, फ़ासिद राय से दख़्ल देने लगा, क़ुरआनो ह़दीस व अ़क़ाइद व इर्शादाते अइम्मा सब का मुख़ालिफ़ हो कर पहुंचा जहां पहुंचा !'' (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 504)

وَاللّٰهُ اعلَمُ ورسولُهٗ اَعلَم عَزَّوَجَلَّ وَصلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم۔

दीनी ह़मिय्यत तू मुझे रब्बे करीम दे
डर अपना, शर्म, अपनी दे क़ल्बे सलीम दे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मज़्मून निगार के लिये म-दनी फूल

सुवाल : मज़्मून निगार के लिये कुछ **म-दनी फूल** इर्शाद हों ।

जवाब : जब भी किसी मज़्मून या तह़रीर की तरकीब करनी हो उस वक़्त सब से पहले अपने दिल से सुवाल करे कि मैं जो लिखने लगा हूं उस की शर-ई हैसिय्यत क्या है ? इस पर सवाब भी मिलेगा या नहीं ? कहीं ऐसा तो नहीं कि गुनाहों भरी बातें लिख कर दुन्या में छोड़ जाऊं और क़ब्रो आख़िरत में फंस जाऊं ! अल ग़रज़ तह़रीर से क़ब्ल उस के दीनी व उख़रवी फ़वाइद और दुन्यवी जाइज़ मनाफ़ेअ़ के **मु-तअ़ल्लिक़** ख़ूब सोच ले, ज़रूरतन उ़-लमाए किराम से मश्वरा कर ले । जब शर-ई और अख़्लाक़ी ह़वाले से मुकम्मल इत़्मीनान ह़ासिल हो जाए तो अब रिज़ाए इलाही पाने और सवाब कमाने के लिये अच्छी अच्छी निय्यतें कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम ले कर क़लम संभाले ।

एक मुसन्निफ़ की ह़िकायत

जाह़िज़ (जो कि **मो'तज़िली** फ़िर्क़े का मुसन्निफ़ गुज़रा है उस) को मरने के बा'द किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : क्या मुआ़-मला

हुवा ? बोला : "अपने क़लम से सिर्फ़ ऐसी बात लिख्खो जिसे क़ियामत में देख कर ख़ुश हो सको ।"

(اِحیاءُ العلوم ج٥ ص ٢٦٦)

وَاللّٰہُ اعلَمُ ورسولُہٗ اَعلَم عَزَّوَجَلَّ وَصلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم۔

दे तमीज़ अच्छे भले की मुझ को ऐ रब्बे ग़फ़ूर
मैं वोही लिख्खूं करे जो सुर्ख़-रू तेरे हुज़ूर

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सुनी सुनाई बात में आ कर किसी को गुनहगार कहना

सुवाल : किसी शख़्स के बारे में कोई बुराई की ख़बर अ़वाम में मश्हूर हो जाए तो उसे छापा जा सकता है या नहीं ?

जवाब : सिर्फ़ इस बुन्याद पर नहीं छाप सकते । **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : كَفٰى بِالْمَرْءِ كَذِباً اَنْ يُّحَدِّثَ بِكُلِّ مَاسَمِعَ۔ या'नी किसी इन्सान के झूटा होने को येही काफ़ी है कि वोह हर सुनी सुनाई बात (बिला तह़क़ीक़) बयान कर दे । (مُقَدّمہ صَحیح مُسلِم ص٨ حدیث٥) किसी के गुनाह की सिर्फ़ शोहरत हो जाना उस के गुनहगार होने की हरगिज़ दलील नहीं । **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ने **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 24 **सफ़ह़ा** 106 ता 108 पर ज़बर दस्त ह़-नफ़ी आ़लिम ह़ज़रते अ़ल्लामा आ़रिफ़ **बिल्लाह नासेह़ फ़िल्लाह** सय्यिदी अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी قُدِّسَ سِرُّہُ الْقُدسی का त़वील इर्शाद नक़्ल किया है उस के एक ह़िस्से का ख़ुलासा

है : किसी को सिर्फ़ इस वजह से गुनहगार कहना जाइज़ नहीं कि बहुत सारे लोग उस की त़रफ़ गुनाह मन्सूब कर रहे हों और यूं भी आज कल लोगों में बुग़्ज़ो कीना और ह़सद व झूट की कसरत है । बा'ज़ अवक़ात आदमी जहालत व ला इल्मी के सबब भी किसी पर इल्ज़ाम रख देता है और लोगों में इस का तज़्किरा भी कर देता है और लोग भी उस के ह़वाले से आगे बयान कर देते हैं । शुदा शुदा येह ख़बर किसी ऐसे शख़्स तक जा पहुंचती है जो कि अपने इल्म पर मग़रूर और फ़ज़्ले ख़ुदा वन्दी से दूर होता है, वोह ला इल्मी के सबब बयान कर्दा उस "गुनाह" का बिला किसी तह़क़ीक़ इस त़रह़ तज़्किरा करता है कि मुझे येह ख़बर तसल्सुल के साथ मिली है । ह़ालां कि जिस की त़रफ़ **गुनाह** की निस्बत की जा रही होती है उस ग़रीब को ख़्वाब में भी इस बात की ख़बर नहीं होती ! मज़ीद फ़रमाते हैं : "जब किसी शख़्स से ब त़रीक़े तवातुर या मुशा-हदा (या'नी आंखों देखा) गुनाह साबित भी हो जाए तब भी इस का इज़्हार बन्द कर दे क्यूं कि **लोगों में बत़ौरे ग़ीबत किसी के गुनाह का तज़्किरा ह़राम है इस लिये कि ग़ीबत सच्ची भी ह़राम है ।**"

وَاللّٰہُ اعلَمُ ورسولُہٗ اَعلَم عَزَّوَجَلَّ وَصلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم۔

ऐबों को ऐब जू की नज़र ढूंडती है पर
हर ख़ुश नज़र को आती है अच्छाइयां नज़र

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

क्या हर ख़बर छापने से क़ब्ल ख़ूब तह़क़ीक़ करनी होगी ?

सुवाल : तो क्या हर ख़बर छापने के लिये ख़ूब तह़क़ीक़ करनी होगी ?

जवाब : ऐसी जाइज़ व बे ज़रर ख़बर जो किसी फ़र्द या क़ौम या इदारे वग़ैरा की मज़म्मत या मज़र्रत या मज़ल्लत पर मब्नी न हो, जिस में किसी क़िस्म की शर-ई ख़ामी या फ़ित्ने या अम्ने आ़म्मा में ख़लल का शाएबा न हो, अपने मुल्क का कोई क़ानून भी न टूटता हो, कमज़ोर क़ौल मिलने पर भी छापी जा सकती है। अलबत्ता ला या'नी ख़बरों, ग़ैर मुफ़ीद नज़्मों और फ़ुज़ूल मज़्मूनों और बेकार चुटकुलों से बचना मुनासिब है । **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : **اِنَّ مِنْ حُسْنِ اِسْلَامِ الْمَرْءِ تَرْكُهٗ مَالَايَعْنِيْهِ۔** **या'नी** फ़ुज़ूल बातें तर्क कर देना इन्सान के इस्लाम की ख़ूबी से है। (ترمذی ج٤ ص١٨٨٥حدیث٢٣٢٥) **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 63 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''बेटे को नसीह़त'' सफ़ह़ा** 9 ता 10 पर **ह़ुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : **ऐ प्यारे बेटे !** ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ने अपनी उम्मत को जो नसीह़तें इर्शाद फ़रमाईं उन में से एक महक्ता म-दनी फूल येह (भी) है : ''बन्दे का **ग़ैर मुफ़ीद कामों** में मश्ग़ूल होना इस बात की अ़लामत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस से अपनी नज़रे इनायत फेर ली है और जिस मक़्सद के लिये बन्दे को पैदा किया गया है अगर उस की ज़िन्दगी का एक लम्ह़ा

भी उस के इ़लावा (या'नी उस मक़्सद से हट कर) गुज़र गया तो वोह (बन्दा) इस बात का ह़क़्दार है कि उस की ह़सरत त़वील हो जाए और जिस की उ़म्र 40 साल से ज़ियादा हो जाए और इस के बा वुजूद उस की बुराइयों पर उस की अच्छाइयां ग़ालिब न हों तो उसे जहन्नम की आग में जाने के लिये तय्यार रहना चाहिये ।" (تفسیر روح البیان، سورۂ بقرۃ، تحت الایۃ: ۲۳۲، ج۱، ص۳۶۳)

(ऐ बेटे !) समझदार और अ़क़्ल मन्द के लिये इतनी ही **नसीह़त** काफ़ी है ।

गो येह बन्दा निकम्मा है बेकार — इस से ले फ़ज़्ल से रब्बे ग़फ़्फ़ार
काम वोह जिस में तेरी रिज़ा है — या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

(वसाइले बख़्शिश, स. 135)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शैत़ान अफ़्वाह उड़ाता है

सुवाल : उड़ती हुई ख़बर मिली कि फ़ुलां फ़ुलां ग्रूप आपस में मु-तसादिम हो गए हैं और बाहम लड़ाई छिड़ गई है ऐसी ख़बरें छापना कैसा ?

जवाब : ऐसी ख़बरें तो मुसद्दक़ा (या'नी तस्दीक़ शुदा) हों तब भी छापने में नुक़्सान के सिवा कुछ नहीं कि उ़मूमन इस त़रह़ हंगामे बढ़ते और जान व माल की हलाकतों और बरबादियों में इज़ाफ़ा होता है । "अम्ने आ़म्मा में ख़लल डालने की कोशिश" पर मब्नी ख़बरें तो ख़ुद हमारे मुल्की क़ानून के भी ख़िलाफ़ हैं । रही उड़ती हुई ख़बर जिसे "अफ़्वाह" कहते हैं, इस पर तो ए'तिमाद करना ही नहीं चाहिये, ऐसी अफ़्वाहें शैत़ान भी

इन्सान की शक्ल में आ कर उड़ाता है। चुनान्चे ह़ज़रते (सय्यिदुना) इब्ने मस्ऊ़द (رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ) फ़रमाते हैं : "शैत़ान आदमी की सूरत इख़्तियार कर के लोगों के पास आता है और उन्हें किसी झूटी बात की ख़बर देता है । लोग फैल जाते हैं तो उन में से कोई कहता है कि मैं ने एक शख़्स को सुना जिस की सूरत पहचानता हूं (मगर) येह नहीं जानता कि उस का नाम क्या है, वोह येह कहता है ।" (مقدّمه مسلم ص۹)

क़ियामे पाकिस्तान के फ़ौरन बा'द अफ़्वाह के सबब होने वाला फ़साद

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان मज़्कूरा रिवायत के इस ह़िस्से, "**فَيُحَدِّثُهُمْ بِالْحَدِيْثِ مِنَ الْكَذِبِ**" (तरजमा : "उन्हें किसी झूटी बात की ख़बर देता है") के तह़्त फ़रमाते हैं : (या'नी) "किसी वाक़िए की झूटी ख़बर या किसी मुसल्मान पर बोहतान या फ़साद व शरारत की ख़बर जिस की अस्ल (या'नी ह़क़ीक़त) कुछ न हो ।" मुफ़्ती साह़िब इस रिवायत के तह़्त मज़ीद फ़रमाते हैं : ह़दीस बिल्कुल ज़ाहिरी मा'ना पर है किसी तावील की ज़रूरत नहीं, येह बारहा (का) तजरिबा है । (चुनान्चे) माहे र-मज़ान की सत्ताईसवीं तारीख़ जुमुआ के दिन या'नी 14 अगस्त 1947 सि.ई. को **पाकिस्तान** बना । ईदुल फ़ित्र के दिन नमाज़े ईद के वक़्त तमाम शहरों बल्कि देहातों (तक) में ख़बर उड़ गई कि सिख मुसल्लह़ हो कर इस बस्ती पर ह़म्ला आवर हो रहे हैं (और) क़रीब ही आ चुके हैं ! हर घर हर मह़ल्ले हर जगह शोर मच गया, लोग तय्यारियां कर के निकल आए । ह़ालां कि बात

ग़लत़ थी हर जगह लोगों ने (येही) कहा कि ''**अभी एक आदमी कह गया है ख़बर नहीं कौन था !**'' फिर जो फ़साद शुरूअ़ हुवा वोह सब ने देख लिया, ख़ुदा की पनाह ! इस (ह़दीसे पाक में दी हुई ख़बर) का ज़ुहूर होता रहता है । शैत़ान छुप कर भी दिलों में वस्वसा डालता रहता है और ज़ाहिर हो कर शक्ले इन्सानी में नुमूदार हो कर भी । लिहाज़ा हर ख़बर बिग़ैर तह़क़ीक़ नहीं फैलानी चाहिये । इस का मत़लब येह भी हो सकता है कि कभी शैत़ान आ़लिम आदमी की शक्ल में आ कर (भी) झूटी ह़दीसें बयान कर जाता है, लोगों में वोह झूटी ह़दीसें फैल जाती हैं । इस लिये ह़दीस को किताब में देख कर अस्नाद वग़ैरा मा'लूम कर के बयान करना चाहिये । मुफ़्ती साह़िब बयान कर्दा ह़दीसे मुबारक के **मु-तआ़ल्लिक़** फ़रमाते हैं : अगर्चे फ़रमान ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का है मगर ''मरफ़ूअ़ ह़दीस'' के ह़ुक्म में है कि ऐसी बात सह़ाबी अपने ख़याल या राय से बयान नहीं फ़रमा सकते हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) से सुन कर ही कह रहे हैं । (मिरआत, जि. 6, स. 477) इस ह़दीसे पाक और इस की शर्ह़ से उन लोगों को भी **दर्स** ह़ासिल करना चाहिये, जो मोबाइल फ़ोन पर s.m.s के ज़रीए़ मौसूल होने वाली त़रह़ त़रह़ की ह़दीसें दूसरों को फ़ॉरवर्ड करते (या'नी आगे बढ़ाते) रहते हैं । ह़ालां कि इन में कई अह़ादीस ''उसूले ह़दीस'' से मु-तसादिम और मौज़ूअ़ या'नी मन घड़त होती हैं ! लिहाज़ा इन ह़दीसों को और इसी त़रह़ **अख़्बारात** वग़ैरा में शाएअ़ कर्दा अह़ादीस

को भी उ़-लमाए किराम के मश्वरे के बिग़ैर न बयान करें न ही किसी को s.m.s करें क्यूं कि ग़ैर मोह़तात़ तरजमों की भरमार और बे एह़तियात़ी का दौर दौरा है ।

وَاللّٰہُ اعلَمُ ورسولُہٗ اَعلَم عَزَّوَجَلَّ وَصلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم۔

लब ह़म्द में ख़ुले, तेरी रह में क़दम चले

या रब ! तेरे ही वासित़े मेरा क़लम चले

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

तरदीदी बयान का त़रीक़ा

सुवाल : अगर किसी अख़्बार में किसी के नाम से कोई क़ाबिले तरदीद मज़्मून या बयान शाएअ़ हुवा हो तो उस की तरदीद का क्या त़रीक़ा होना चाहिये ?

जवाब : तरदीद में फ़ुलां शख़्स ने येह कहा है या बयान दिया है वग़ैरा न छापा जाए बल्कि सिर्फ़ उस **अख़्बार** के नाम पर इक्तिफ़ा किया जाए कि ''फ़ुलां अख़्बार या हफ़्त रोज़े या माहनामे ने ऐसा लिखा है ।'' मज़्मून निगार या जिस की त़रफ़ बयान मन्सूब है उस की ज़ात पर हरगिज़ ह़म्ला न किया जाए, क्यूं कि **अख़्बार** या माहनामे वग़ैरा में किसी का नाम शाएअ़ हो जाना ''शर-ई दलील'' नहीं । मुझे (सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ को) ख़ुद तजरिबा है कि बा'ज़ अवक़ात मेरी त़रफ़ से ऐसी बातें **अख़्बार**

में आ जाती हैं जिन का मुझे पता तक नहीं होता ! एक बार मैं ने किसी आ़लिम साहिब से उन की त़रफ़ मन्सूब ग़ैर ज़िम्मेदाराना अख़्बारी बयान के **मु-तअ़ल्लिक़** इस्तिफ़्सार किया तो कुछ इस त़रह़ जवाब मिला : "मैं ने इस त़रह़ नहीं कहा था, सह़ाफ़ी ने फ़ोन किया था और अपनी मरज़ी से फुलां जुम्ला बढ़ा दिया ।" बसा अवक़ात किसी की त़रफ़ मन्सूब कर के उस की मरज़ी के ख़िलाफ़ ऐसा बयान छाप दिया जाता है जिस की तरदीद करने में फ़ितने का अन्देशा होता है और यूं वोह ख़ूब आज़्माइश में आ जाता है। म-सलन किसी मुल्क का ग़ैर मुस्लिम सद्र मर गया, किसी की त़रफ़ से ता'ज़ियती बयान डाल दिया गया और उस में मरने वाले को "मर्ह़ूम" लिख दिया या उस के लिये "दुआ़ए मग़्फ़िरत करना" मन्सूब कर दिया तो तरदीद का मरह़ला बड़ा नाज़ुक है। यहां येह मस्अला भी समझ लीजिये कि किसी ग़ैर मुस्लिम या मुरतद को मरने के बा'द **मर्ह़ूम** कहने वाले या उस के लिये **दुआ़ए मग़्फ़िरत** करने वाले या उसे **जन्नती** कहने वाले पर हुक्मे कुफ़्र है। (माख़ूज़न बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, स. 185) सद करोड़ अफ़्सोस ! कई अख़्बारात में इस त़रह़ के कुफ़्रिय्यात बिला तकल्लुफ़ छाप दिये जाते हैं ! इसी त़रह़ कोई ना पसन्दीदा

शख़्स इक़्तिदार पर आ गया और किसी की त़रफ़ से ख़्वाह म ख़्वाह मुबारक बाद का पैग़ाम और दुआ़इया कलिमात छाप दिये गए, बेचारा तरदीद कैसे करेगा ? बहर ह़ाल ! अख़्बार वालों को नाप तोल कर लिखना और उ़-लमाए किराम की रहनुमाई के साथ चलना ज़रूरी है वरना कुफ़्रिय्यात लिख देने से ईमान के लाले पड़ सकते हैं । किसी ने बयान न दिया हो उस की त़रफ़ से क़स्दन झूटा बयान छाप देना भी गुनाह और अगर बयान दिया हो मगर उस में अपनी त़रफ़ से ऐसी ग़ैर वाजिबी तरमीम कर देना जो झूट मानी जाए वोह भी गुनाह है ।

मुझ को ह़िक्मत का ख़ज़ाना या इलाही कर अ़त़ा
और चलाने में क़लम कर दे तू मह़फ़ूज़ अज़ ख़त़ा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

एडीटर को कैसा होना चाहिये ?

सुवाल : अख़्बार और टीवी चेनल के मालिक व मुदीर (Editor) और डायरेक्टर को कैसा होना चाहिये ?

जवाब : T.V. चेनल, अख़्बार, हफ़्त रोज़ा, माहनामा वग़ैरा के मालिकान, मुदीरान व ज़िम्मेदारान को इल्मे दीन के ज़ेवर से आरास्ता होना चाहिये या कम अज़ कम "मोह़तात़ फ़िद्दीन हों" और उ़-लमाए किराम के मा तह़त रहते हुए

उन से रहनुमाई ह़ासिल कर के चेनल चलाते या **अख़्बार** वग़ैरा निकालते हों, येह लोग अगर इल्मे दीन से आ़री, ख़ौफ़े ख़ुदा से ख़ाली, आज़ाद ख़याल और "बे लगाम" हुए तो उन का चेनल, **अख़्बार** या माहनामा वग़ैरा मुसल्मानों के लिये बे अ़-मली बल्कि गुमराही का आला साबित हो सकता है ।

अल्लाह ! इस से पहले ईमां पे मौत दे दे
नुक़्सां मेरे सबब से हो सुन्नते नबी का

(वसाइले बख़्शिश, स. 195)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

लोगों के ह़ालात की मा'लूमात रखना

सुवाल : लोगों के मौजूदा ह़ालात से बा ख़बर रहने में कोई मुज़ा-यक़ा तो नहीं ?

जवाब : जाइज़ ज़राएअ़ से मुफ़ीद व जाइज़ मा'लूमात ह़ासिल करने में कोई मुज़ा-यक़ा नहीं, बल्कि अच्छी निय्यतें हों तो सवाब मिलेगा । "शमाइले तिरमिज़ी" में ह़ज़रते सय्यिदुना हिन्द बिन अबी हाला رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत कर्दा एक त़वील ह़दीस में येह भी है कि يَتَفَقَّدُ اَصْحَابَهٗ وَ يَسْأَلُ النَّاسَ عَمَّا فِى النَّاسِ या'नी शहन्शाहे **ख़ैरुल अनाम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **सह़ाबए**

किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के ह़ालात की मा'लूमात फ़रमाते और लोगों में होने वाले वाक़िआ़त के मु-तअ़ल्लिक़ इस्तिफ़्सारात (या'नी पूछगछ) करते । (شَمائل تِرمذی ص۱۹۲) ह़ज़रते अ़ल्लामा **अ़ली क़ारी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ह़ाज़िर न होते उन के बारे में दरयाफ़्त फ़रमाते, अगर कोई बीमार होता तो उस की इ़यादत फ़रमाते या कोई मुसाफ़िर होता तो उस के लिये दुआ़ करते, अगर किसी का इन्तिक़ाल हो जाता तो उस के लिये मग़्फ़िरत की दुआ़ फ़रमाते और लोगों के मुआ़-मलात की तह़क़ीक़ात कर के उन की इस्लाह़ फ़रमाते । (جمع الوسائل ج ۲ ص ۱۷۷)

وَاللّٰہُ اعلَمُ ورسولُہٗ اَعلَم عَزَّوَجَلَّ وَصلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم۔

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ख़बरें मा'लूम करने की अच्छी अच्छी निय्यतें

सुवाल : ख़बरें मा'लूम करने के लिये क्या क्या **अच्छी निय्यतें** होनी चाहिएं ?

जवाब : हर जाइज़ काम से क़ब्ल ह़स्बे मौक़अ़ **अच्छी अच्छी निय्यतें** कर लेनी चाहिएं । किसी फ़र्द के बारे में जाइज़ मा'लूमात ह़ासिल करने में इस त़रह़ **निय्यतें** की जा सकती हैं । म-सलन इस के बारे में अच्छी ख़बर सुनूंगा तो مَاشَاءَ اللّٰہ،بَارَکَ اللّٰہ

कहूंगा, इस का दिल ख़ुश करने के लिये मुबारक बाद पेश करूंगा, अगर येह परेशान हुवा तो तसल्ली दे कर इस की दिलजूई करूंगा । मुम्किन हुवा तो इस की इमदाद करूंगा, ज़रूरतन अच्छा मश्वरा दूंगा, सफ़र पर हुवा तो दुआ़ करूंगा । बीमार हुवा तो इ़यादत या दुआ़ए शिफ़ा या दोनों दूंगा । वग़ैरा ।

ख़बर मा'लूम करने की निराली ह़िकायत

किसी की ख़ैर ख़बर मा'लूम करने पर अगर वोह ह़ाजत मन्द ज़ाहिर हो तो मुम्किना सूरत में उस की मदद करनी चाहिये । ''कीमियाए सआ़दत'' में है : **सय्यिदुल मुअ़ब्बिरीन** ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम मुह़म्मद इब्ने सीरीन** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن ने एक आदमी से पूछा : क्या ह़ाल है ? जवाब दिया : (बहुत बुरा ह़ाल है कि) कसीरुल इ़याल हूं, (या'नी बाल बच्चे ज़ियादा हैं) अख़्राजात पास नहीं, ऊपर से 500 दिरहम का क़र्ज़दार भी हूं, येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद इब्ने सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن अपने घर तशरीफ़ लाए, एक हज़ार दिरहम उठाए और उस दुख्यारे के पास आए और सारे दिरहम उसे अ़त़ा फ़रमाए और फ़रमाया : 500 दिरहम से क़र्ज़ अदा कीजिये और 500 घर के ख़र्च में इस्ति'माल फ़रमाइये । फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अ़ह्द किया कि

''किसी से ह़ाल नहीं पूछूंगा।'' **ह़ुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى येह **ह़िकायत** नक़्ल करने के बा'द फ़रमाते हैं : ''ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद इब्ने सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن ने इस ख़ौफ़ से आयन्दा किसी से ह़ाल दरयाफ़्त न करने का अ़ह्द किया कि अगर ख़ुद पूछ कर ख़बर मा'लूम करने के बा'द मैं ने उस की मदद न की तो पूछने के मुआ़-मले में **मुनाफ़िक़** ठहरूंगा ।'' (کیمیائے سعادت،ج۱ ص ۴۰۸) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

وَاللّٰهُ اعلَمُ ورسولُهٗ اَعلَم عَزَّوَجَلَّ وَصلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم۔

मुझे दे ख़ुद को भी और सारी दुन्या वालों को
सुधारने की तड़प और ह़ौसला या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 96)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

अख़्बार पढ़ना कैसा ?

सुवाल : अख़्बार बीनी करना कैसा ?

जवाब : जो **अख़्बार** शर-ई तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ हो उसे पढ़ना **जाइज़** है और जो अख़्बार ऐसा नहीं उस का मुत़ा-लआ़ सिर्फ़ उस के लिये जाइज़ है जो बे पर्दा औ़रतों की तसावीर और फ़िल्मी

इश्तिहारात के फ़ोहूश मनाज़िर वग़ैरा से निगाहों की हिफ़ाज़त पर क़ुदरत रखता हो, गुनाहों भरी तहरीरात वग़ैरा बिला इजाज़ते शर-ई न पढ़ता हो। बा'ज़ अख़्बारात में बसा अवक़ात वाहियात व ख़ुराफ़ात के साथ साथ गुमराह कुन कलिमात बल्कि कभी तो مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **कुफ़्रिय्यात** तक लिखे होते हैं ! ऐसे अख़्बारात पढ़ने वाले के ख़यालात में जो फ़सादात पैदा हो सकते हैं वोह हर बा शुऊ़र शख़्स समझ सकता है। यहां येह बात अ़र्ज़ करता चलूं अगर कभी किसी **आ़लिमे दीन** बल्कि आ़म आदमी को भी अख़्बार बीनी करता पाएं तो हरगिज़ **बद गुमानी** न फ़रमाएं बल्कि ज़ेहन में हुस्ने ज़न जमाएं कि येह शर-ई एह़तियातों को मल्हूज़ रखते हुए मुता-लआ़ कर रहे होंगे। आ़म आदमी के लिये ऐसा **अख़्बार** जो गुनाहों भरा हो उसे पढ़ने के दौरान ख़ुद को मा'सियत व गुमराही से बचाना निहायत मुश्किल है और चूंकि बा'ज़ अवक़ात ग़ैर मोह़तात़ अख़्बारात की तहरीरात में कुफ़्रिय्यात भी होते हैं इस लिये इन का मुता-लआ़ مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **कुफ़्र** के गहरे गढ़े में जा पड़ने का सबब भी बन सकता है। रहे **कुफ़्फ़ार के अख़बार** तो उन की त़रफ़ तो आ़म मुसल्मान को देखना भी नहीं चाहिये कि जब मुसल्मानों के कई अख़्बार बे क़ैदी का शिकार हैं तो उन का क्या पूछना ! ज़ाहिर है उन में तो **कुफ़्रिय्यात की भरमार** होगी और वोह अपने बातिल

मज़हब का परचार भी करते होंगे । बहर ह़ाल मुसल्मान को सिर्फ़ **अख़्बार बीनी** ही नहीं हर काम के आग़ाज़ से क़ब्ल उस के उख़्रवी अन्जाम पर ग़ौर कर लेना चाहिये और हर उस काम से बचना चाहिये जिस में आख़िरत के बिगाड़ का अन्देशा हो । याद रखिये ! ''बनाना'' बहुत मुश्किल है जब कि ''बिगाड़ना'' निहायत आसान । देखिये ! मकान बनाना किस क़दर दुश्वार काम है मगर इसे गिराना हो तो आन की आन में गिरा दिया जाता है ! इसी त़रह़ लिखना या नक़्शा वग़ैरा बनाना मुश्किल उसे बिगाड़ देना निहायत आसान, फ़रनीचर बनाना मुश्किल उसे तोड़ फोड़ कर बिगाड़ना आसान, खाना पकाना मुश्किल पके हुए को बिगाड़ना आसान, किसी को क़रीब कर के दोस्त बनाना बहुत मुश्किल मगर दो लफ़्ज़ म-सलन ''दफ़अ़ हो जा !'' कह कर दोस्ती बिगाड़ देना बिल्कुल आसान, **अख़्बार** को मुख़्तलिफ़ मराह़िल से गुज़ार कर फ़ाइनल करना फिर छापना वग़ैरा मुश्किल मगर फाड़ कर बिगाड़ देना आसान, इसी त़रह़ **आख़िरत** को भी समझिये कि इसे बेहतर बनाने के लिये ख़ूब इबादत व रियाज़त करनी, हर गुनाह से बचना और ख़्वाहिशाते नफ़्सानी मारनी होती हैं जब कि बिगाड़ना निहायत आसान है जैसा कि **शैत़ान ने लाखों साल इबादत** कर के एक मक़ाम ह़ासिल किया था मगर **तकब्बुर** के बाइ़स नबी की तौहीन

कर के लम्ह़े भर में आख़िरत बिगाड़ ली और हमेशा हमेशा के लिये जहन्नमी हो गया । "**अल्लाहु** क़दीर عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर" से लरज़ा बर अन्दाम रहते हुए हर मुआ़-मले में आख़िरत की भलाई की त़रफ़ नज़र रखना हर मुसल्मान के लिये ज़रूरी है । पारह 28 **सू-रतुल ह़श्र** आयत नम्बर 18 में फ़रमाने इलाही है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** से डरो और हर जान देखे कि कल के लिये क्या आगे भेजा ।

कुछ नेकियां कमा ले जल्द आख़िरत बना ले
कोई नहीं भरोसा ऐ भाई ! ज़िन्दगी का

(वसाइले बख़्शिश, स. 195)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सह़ाफ़ी कहीं आप के मुख़ालिफ़ न हो जाएं

सुवाल : आप को लगता नहीं कि आप के इस त़रह़ के जवाबात से सह़ाफ़ी ह़ज़रात आप के मुख़ालिफ़ हो जाएंगे ?

जवाब : मैं सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वाले मुसल्मानों से मुख़ातिब हूं, मैं ने जो कुछ अ़र्ज़ किया है मेरा हुस्ने ज़न है कि क़ल्बे सलीम रखने वाला हर **बा ज़मीर सह़ाफ़ी** उस को दुरुस्त तस्लीम करेगा । मैं ने मुल्क व मिल्लत और

आख़िरत की भलाई की बातें ही तो अ़र्ज़ की हैं, जब शरीअ़ते इस्लामिया से हट कर बल्कि मुल्की क़ानून के भी ख़िलाफ़ कोई कलाम नहीं किया तो कोई मुसल्मान सहाफ़ी मुझ से क्यूं इख़्तिलाफ़ करने लगा ! नफ़्स की ह़ला बाज़ियों में आ कर, ग़ैर शर-ई मस्लह़तों को आड़ बना कर मेरी त़रफ़ से पेश कर्दा ख़ैर ख़्वाहाना इस्लामी अह़कामात की मुख़ा-लफ़त कर के कोई मुसल्मान अपनी आख़िरत क्यूं बिगाड़ेगा ! हां ख़ुदा न ख़्वास्ता मैं ने कोई बात मुल्की क़ानून से टकराने वाली या ख़िलाफ़े शरीअ़त कर दी है तो बराए करम ! क़ानूनी और शर-ई दलाइल के साथ मेरी इस्लाह़ फ़रमा दीजिये मुझे अपने मौक़िफ़ पर बिला वजह अड़ता नहीं اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ शुक्रिया के साथ रुजूअ़ करता पाएंगे । बेशक मैं मानता हूं कि बे राह-रवी का दौर दौरा है और पानी सर से ऊंचा हो चुका है इस लिये शायद मेरी येह इल्तिजाएं सदा ब सह़रा बन कर ही रह जाएं और येह भी कुछ बईद नहीं कि कोई नादान दोस्त, अधूरी बातें सुन कर या सुनी सुनाई बातों में आ कर मुझ से ''रूठ'' ही जाए । ऐसों के लिये मैं सिर्फ़ किसी का येह शे'र ही पढ़ सकता हूं :

हम ''दुआ'' लिखते रहे वोह ''दग़ा'' पढ़ते रहे
एक नुक़्ते ने हमें ''मह़रम'' से ''मुजरिम'' कर दिया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अख़्बार कैसा होना चाहिये

सुवाल : अख़्बार निकालना जाइज़ है या नहीं ? अगर जाइज़ है तो **अख़्बार कैसा होना चाहिये ?** इस की इशाअ़त के लिये कुछ **म-दनी फूल** दे दीजिये ।

जवाब : **अख़्बार** निकालना जाइज़ है । मुसल्मान हर मुआ़-मले में शर-ई अह़्कामात के मा तह़्त है और **अख़्बार** के मुआ़-मले में भी इसे शरीअ़त की पासदारी करनी होगी । ख़बरदार ! **अख़्बार** का मुआ़-मला निहायत नाज़ुक है, मा'मूली सी बे एह़्तियाती मुसल्मानों को फ़ितना व फ़साद, आपसी बुग़्ज़ो इनाद, गुनाह व मआ़सी बल्कि गुमराही व इल्ह़ाद के ग़ार में धकेल कर बरबाद कर सकती है और इस का उख़्रवी वबाल **अख़्बार** के मालिकान व ज़िम्मेदारान पर आ सकता है । इन ख़त़रात से बचने के लिये 16 **म-दनी फूल** (जिन में ज़िम्नन मुल्के पाकिस्तान की क़ानूनी शिक़्क़ें भी शामिल हैं) क़बूल फ़रमाइये ।

﴾1﴿ मुदीर पारसा व मोह़्तात़ आ़लिमे दीन हो या बा अ़मल उ़-लमाए किराम की मजलिस के मा तह़्त काम करने वाला ।

﴾2﴿ उ़-लमाए किराम हर हर ख़बर, मुरा-सला, नज़्म, कॉलम, आर्टीकल और इश्तिहार वग़ैरा ब नज़रे ग़ाइर अव्वल ता आख़िर पढ़ कर, तन्क़ीह़ व तफ़्तीश फ़रमा कर इजाज़त बख़्शें तब **अख़्बार** (या माहनामा वग़ैरा) इशाअ़त के लिये प्रेस में जाए ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

﴾3﴿ किसी फ़र्दे मुअय्यन या बरादरी की मज़म्मत ऐ़ब-दरी और ईज़ा रसानी पर मुश्तमिल ख़बरें बिला इजाज़ते शर-ई़ शाएअ़ न की जाएं।

﴾4﴿ ऐसा शख़्स जिस के शर से मुसल्मानों को बचाना मक़्सूद हो और फ़ितने और अम्ने आ़म्मा में ख़लल का अन्देशा न हो तो सवाब की निय्यत से उस का नाम और उस में मौजूद सिर्फ़ ख़ास उस ख़राबी की इशाअ़त कर दी जाए जो मुसल्मानों के लिये मुज़िर हो। **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : क्या फ़ाजिर के ज़िक्र से बचते हो उस को लोग कब पहचानेंगे ! फ़ाजिर का ज़िक्र उस चीज़ के साथ करो जो उस में है ताकि लोग उस से बचें।

(اَلسّنَنُ الکُبری لِلْبَیْہَقی ج۱۰ ص۳۵٤ حدیث ۲۰۹۱٤)

﴾5﴿ किसी शख़्से **मुअ़य्यन** की काम्याब या नाकाम ख़ुदकुशी की ख़बर न शाएअ़ की जाए।

﴾6﴿ किसी बद मज़्हब का बयान या मज़्मून वग़ैरा शर-ई़ अग़्लात़ से पाक हो तब भी न छापा जाए कि इस का एक नुक़्सान येह भी हो सकता है कि क़ारिईन उस बद मज़्हब से मु-तआ़रिफ़ होने के साथ साथ उस की शख़्सिय्यत से **मु-तअस्सिर** हो सकते हैं जो कि ईमान के लिय ज़हरे हलाहल है। याद रहे ! फ़सादे अ़क़ीदा फ़सादे अ़मल से ब द-र-जहा बदतर है।

﴾7﴿ किसी "सियासी पार्टी" से गठजोड़ कर के उस के मा तह़्त न रहा जाए कि झूटी ख़ुशामद, फ़रीक़े मुख़ालिफ़ की बे जा मुख़ा-लफ़त, ऐ़ब-दरी, इल्ज़ाम तराशी और मुसल्मानों की ईज़ा

रसानी वग़ैरा वग़ैरा गुनाहों से बचना क़रीब ब ना मुम्किन हो जाएगा और मा तह़ूती के बाइस ऐसे अख़्बार की ''आज़ादिये सह़ाफ़त'' ख़ुद बख़ुद ख़त्म हो जाएगी !!!

﴾8﴿ उन ख़बरों और बयानात की इशाअ़त न की जाए जिन से मुसल्मानों में इन्तिशार हो या वत़ने अ़ज़ीज़ के वक़ार को ठेस पहुंचे ।

﴾9﴿ मुल्की राज़ इफ़्शा न किये जाएं ।

﴾10﴿ क़लम तख़्रेबी नहीं सिर्फ़ व सिर्फ़ ता'मीरी अन्दाज़ में चलाया जाए और तह़रीरों के ज़रीए मुसल्मानों को नेक काम और ग़ैर मुस्लिमों को दीने इस्लाम के क़रीब किया जाए ।

﴾11﴿ अपने अख़्बार से मुन्सलिक अजीर सह़ाफ़ियों पर तह़ाइफ़ और ख़ुसूसी दा'वतें क़बूल करने के ह़वाले से पाबन्दी रखी जाए कि अक्सर सूरतों में येह रिश्वतें होती हैं और इन की वजह से बसा अवक़ात मुरव्वतन गुनाहों भरे बयानात वग़ैरा की इशाअ़त करनी पड़ जाती है !

﴾12﴿ फ़िल्म एडीशन, फ़िल्मी **सफ़ह़ा**, फ़िल्मों, स्टेज डिरामों और म्यूज़ीकल प्रोग्रामों, ना जाइज़ चीज़ों और ना जाइज़ कामों वग़ैरा के गुनाहों भरे इश्तिहारात देने से कुल्ली त़ौर पर लाज़िमी इज्तिनाब (या'नी परहेज़) किया जाए ।

﴾13﴿ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के गुनाहों भरे प्रोग्रामों की फ़ेहरिस शाएअ़ न की जाए ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह़ और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

﴾14﴿ शर–ई तौ़र पर जुर्म साबित हो जाने की सूरत में भी चूंकि शख़्से मुअ़य्यन की बिला मस्लह़त ख़बर मुश्तहर करने की शरअ़न इजाज़त नहीं लिहाज़ा उस की पर्दा पोशी की जाए और मुम्किना सूरत में निजी तौ़र पर नेकी की दा'वत के ज़रीए ऐसे मुजरिम की इस्लाह़ की सूरत निकाली जाए। ढंडोरा पीटने और अख़्बारों में ख़बरें चमकाने से सुधार के बजाए अक्सर बिगाड़ पैदा होता है और बसा अवक़ात ज़िद में आ कर "छोटा मुजरिम" बड़े मुजरिम का रूप धार लेता है !

﴾15﴿ जानदारों की तस्वीरें न छापी जाएं (जो उ़–लमाए किराम मूवी और तस्वीर में फ़र्क़ करते हुए मूवी को जाइज़ कहते हैं उन्हीं के फ़तवे पर अ़मल करते हुए दा'वते इस्लामी "म–दनी चेनल" के ज़रीए दुन्या भर में इस्लाम की ख़िदमत करने में कोशां है)

﴾16﴿ बेहतर येह है कि अख़्बार में आयाते क़ुरआनिया और इन का तरजमा न छापा जाए क्यूं कि जहां आयत या इस का तरजमा लिखा हो वहां और उस के ऐन पीछे बिग़ैर त़हारत के छूना ह़राम है और अक्सर लोग बे वुज़ू अख़्बार पढ़ते होंगे और मस्अला न मा'लूम होने की वजह से छूने के गुनाह में पड़ते होंगे।

मैं तह़रीर से दीं का डंका बजा दूं
अ़त़ा कर दे ऐसा क़लम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 83)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अख़्बार के दफ़्तर में काम करना कैसा ?

सुवाल : गुनाहों भरे अख़्बार के दफ़्तर में काम करना और अख़्बार की छपाई वग़ैरा में मुआ़-वनत करना कैसा ? तन-ख़्वाह जाइज़ होगी या ना जाइज़ ?

जवाब : गुनाहों भरा अख़्बार मुकम्मल त़ौर पर गुनाहों भरा नहीं होता, इस में जाइज़ तह़रीरात भी शामिल होती हैं, अगर सिर्फ़ जाइज़ मज़ामीन की नोकरी है तो जाइज़ और इस की तन-ख़्वाह भी जाइज़ और अगर ना जाइज़ काम ही करना पड़ता है तो नोकरी भी ना जाइज़ और तन-ख़्वाह भी ना जाइज़ । अगर दोनों त़रह़ के काम करने पड़ते हैं तो जितना जाइज़ काम किया उस पर मिलने वाली उजरत जाइज़ और जितना ना जाइज़ काम किया उतनी उजरत ना जाइज़ । मज़्कूरा दफ़्तर में ऐसा काम करना जाइज़ है जिस में गुनाह में किसी त़रह़ से मदद न करनी पड़ती हो । म-सलन चोकीदारी वग़ैरा ।

अख़्बार बेचना कैसा ?

सुवाल : अख़्बार बेचना जाइज़ है या नहीं ?

जवाब : वोह अख़्बार जो बुन्यादी त़ौर पर ख़बरों पर मुश्तमिल हो लेकिन कुछ हिस्सा हर क़िस्म के इश्तिहारात पर भी मुश्तमिल हो उन का बेचना अख़्बार फ़रोशों के लिये जाइज़ है और आमदनी भी ह़लाल है जब कि जो अख़्बार बुन्यादी त़ौर पर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा । (کنز العمال)

फ़िल्मों या ना जाइज़ कामों की तश्हीर ही के लिये हों उन का बेचना ना जाइज़ है ।

रिज़्क़े ह़लाल दे मुझे ऐ मेरे किब्रिया
देता हूं तुझ को वासित़ा तेरे ह़बीब का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हर सुब्ह़ येह निय्यत कर लीजिये
आज का दिन आंख, कान, ज़बान और हर उ़ज़्व को **गुनाहों** और फ़ुज़ूलियात से बचाते हुए, **नेकियों** में गुज़ारूंगा । اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ

त़ालिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा का पड़ोस

6 **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** 1433 सि.हि.
27-6-2012

ماٰخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآنِ پاک	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	فیض القدیر	دار الکتب العلمیۃ بیروت
تفسیر روح البیان	کوئٹہ	مراۃ	ضیاء القرآن مرکز الاولیاء لاہور
خزائن العرفان	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	فتاویٰ رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
بخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
مسلم	دار ابن حزم بیروت	دلائل النبوۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
سنن ابوداود	دار احیاء التراث العربی بیروت	ابن عساکر	دار الفکر بیروت
ترمذی	دار الفکر بیروت	جمع الوسائل	مدینۃ الاولیاء ملتان
سنن ابن ماجہ	دار المعرفۃ بیروت	تنبیہ الغافلین	دار الکتاب العربی بیروت
مصنف عبد الرزاق	دار الکتب العلمیۃ بیروت	بستان الواعظین	دار الکتب العلمیۃ بیروت
معجم کبیر	دار احیاء التراث العربی بیروت	القول البدیع	مؤسسۃ الریان بیروت
معجم اوسط	دار الکتب العلمیۃ بیروت	اِحیاء العلوم	دار صادر بیروت
شعب الایمان	دار الکتب العلمیۃ بیروت	کیمیائے سعادت	انتشارات گنجینہ تہران
السنن الکبریٰ	دار الکتب العلمیۃ بیروت	وسائل بخشش	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
الجامع الصغیر	دار الکتب العلمیۃ بیروت	☆☆☆	☆☆☆

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है। (ابویعلی)

फ़ेहरिस

अख़्बार के बारे में सुवाल जवाब		मुसल्मानों के ऐ़ब ढूंडना मुनाफ़िक़ का काम है	29
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	बदकारी की ख़बर लगाना कैसा ?	29
सह़ाफ़त की ता'रीफ़	1	ज़िना का शर-ई सुबूत	30
मौजूदा सह़ाफ़त की दो क़िस्में	2	लोहे के 80 कोड़ों की सज़ा	30
दुन्या का सब से पहला अख़्बार	2	इश्तिहारात के बारे में म-दनी फूल	31
खुदकुशी की ख़बरें	3	फ़िल्मी इश्तिहारात	33
पहलूओं से गोश्त काट कर खिलाने का अ़ज़ाब	5	अख़्बारी मज़ामीन कैसे हों ?	34
खुदकुशी में नाकाम रहने वालों की ख़बरें	6	उ़-लमा व मशाइख़ की किरदार कुशी	35
मारे जाने वाले डाकूओं की मज़म्मत	8	बा'ज़ कॉलम निगारों के कारनामे	35
वोह इस वक़्त जन्नत की नहरों में ग़ोते लगा रहा है	8	गुनाहों भरी तह़रीर मरने के बा'द गुनाह जारी रख सकती है	36
चोर डाकू की गिरिफ़्तारी की ख़बरें देना	10	एक ग़लत़ लफ़्ज़ ही कहीं जहन्नम में न डाल दे	37
तूने चोरी की (ह़िकायत)	11	मज़्मून निगार के लिये म-दनी फूल	38
गिरिफ़्तार शुदा चोर की ख़बर लगाना कैसा ?	13	एक मुसन्निफ़ की ह़िकायत	38
चोर से बढ़ कर मुजरिम	14	सुनी सुनाई बात में आ कर किसी को गुनहगार कहना	39
मुल्ज़म का नाम छापना कैसा ?	15	क्या हर ख़बर छापने से क़ब्ल ख़ूब तह़क़ीक़ करनी होगी ?	41
मुसल्मान की बे इ़ज़्ज़ती कबीरा गुनाह है	15	शैत़ान अफ़्वाह उड़ाता है	42
खुदा व मुस्त़फ़ा को ईज़ा देने वाला	16	क़ियामे पाकिस्तान के फ़ौरन बा'द अफ़्वाह के सबब होने वाला फ़साद	43
दह़शत गर्दी की वारिदात की ख़बर छापने के नुक़्सानात	18	तरदीदी बयान का त़रीक़ा	45
दह़शत गर्दी की ख़बर अख़्बार की जान होती है	19	एडीटर को कैसा होना चाहिये ?	47
सह़ाफ़त की आ़ज़ादी	21	लोगों के ह़ालात की मा'लूमात रखना	48
"अच्छे बच्चे घर की बात बाहर नहीं किया करते !"	21	ख़बरें मा'लूम करने की अच्छी अच्छी निय्यतें	48
ऐसी ख़बर शाएअ़ न फ़रमाएं जो फ़ितने जगाए	23	ख़बर मा'लूम करने की निराली ह़िकायत	49
सन्सनी ख़ैज़ ख़बरें फैलाना	24	अख़्बार पढ़ना कैसा ?	50
सह़ाफ़ियों का कुरेद कर बातें उगलवाना	25	सह़ाफ़ी कहीं आप के मुख़ालिफ़ न हो जाएं	53
मुसल्मानों की ऐ़बजूई न करो	26	अख़्बार कैसा होना चाहिये	54
.....तो तुम उन को ज़ाएअ़ कर दोगे	27	अख़्बार के दफ़्तर में काम करना कैसा ?	58
ऐ़ब जू ख़ुद रुस्वा होगा	28	अख़्बार बेचना कैसा ?	58

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती है, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी इन्आ़मात"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629365
हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786
हुब्ली : A.J. मुद्दोल कोम्पलेक्स, A.J. मुद्दोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net